दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मज्लिसे शूरा के रुक्न मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ अल अत्तारिय्युल म-दनी के हालाते ज़िन्दगी पर पर मुश्तमिल तालीफ़

Muftiye Dawate Islami (Hindi)

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी

दा'वते इस्लामी से किस तरह मु-तअस्सिर हुए :
अमीरे अहले सुन्नत से महब्बत :
निगराने शूरा के तहरीरी तअस्सुरात
मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की इन्फ़िरादी कोशिशें
दुबला पतला मुबल्लिग़
मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी बतौरे अलाक़ाई निगरान
तख़्तए ग़ुस्ल पर मुस्कराहट
तदफ़ीन की क़ैफ़िय्यात
ईसाले सवाब :
म-दनी बहारें

पेशकश : मज्लिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना®
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Ph:91-79-25391168 E-mail:maktabahind@gmail.com, www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَكَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत 13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी

येह रिसाला (**मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी**)

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है, इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल) मुत्तल़अ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) मक-त-बतुल मदीना
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात।
MO. 09374031409 E-mail : maktabahind@gmail.com

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तारीख़: **24** रबीउ़ल ग़ौस **1428** हि. ह़वाला: **131**

तस्दीक़ नामा

الحمدللّٰہ رب العٰلمین والصلوٰۃ والسلام علیٰ سید المرسلین
وعلی اٰلہ واٰصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि येह किताब

"मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी"

(मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़-रबी इ़बारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

(दा'वते इस्लामी)

22-05-2006

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर स-फ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

''मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी'' के 15 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 15 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।''

(अल मो'जमुल कबीर लित्तबरानी, अल हदीस:5942, जि.6, स.185)

दो म-दनी फूल :

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

1..... रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा।

2..... ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और

3..... क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा।

4..... क़ुरआनी आयात और

5..... अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा।

6..... जहां जहां ''अल्लाह'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और

7..... जहां जहां सरकार का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा।

8..... मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ाजी मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी علیہ رحمۃ اللہ الغنی के नक़्शे क़दम पर चलने की कोशिश करूंगा।

9..... इस रिवायत ''تَهَادَوْ تَحَابُّوْ या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है .'' (ह़िल्यतुल औलिया, रक़म : 10750, जि. 7, स. 335) पर अ़मल करते हुए इस किताब में दिये गए वाक़िआ़त दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिह़ीन की ब-र-कतें लूटूंगा।

(10) (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा।

(11) (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) ''याद दाश्त'' वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा।

(12)..... दूसरों को येह किताब पढ़ने तरग़ीब दिलाऊंगा।

(13) इस ह़दीसे पाक ''تَهَادَوْاتَحَابُّوْا'' एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।

(14) औलिया की सिफ़ात को अपनाऊंगा।

(15)..... इस किताब के मुत़ा-लए का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा।

किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को मुत्तलअ़ करूंगा।

दा 'वते इस्लामी की मर्कज़ी मज्लिसे शूरा के रुक्न मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ अल अत्तारिय्युल म-दनी عَلَيهِ رَحمَةُاللّٰهِ الغَنِی के ह़ालाते ज़िन्दगी पर पर मुश्तमिल तालीफ़

عليه رحمة الله الغنى

मुफ़्तिये दा 'वते इस्लामी

www.dawateislami.net
I.T. Majlis of DawateIslami

: पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या दा 'वते इस्लामी

(शो 'बए इस्लाह़ी कुतुब)

: नाशिर :

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

الصلوۃ والسلام علیک یا رسول اللہ وعلی آلک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम किताब : मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी
पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए इस्लाही़ कुतुब)
सिने त़बाअ़त : मुह़र्रमुल ह़राम 1430 हि., जनवरी 2009 ई.
नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

: मक-त-बतुल मदीना की शाख़े :

बम्बई : 19,20, मुह़म्मदअली रोड, मांडवी पोस्ट ओफ़िस के सामने, बम्बई
फ़ोन : **022-23454429**

देहली : 421, मटिया महेल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-**23284560**

नागपुर : मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (**C / 0**) जामिअ़तुल मदीना,कमाल शाह बाबा दरगाह के पास
मोमिनपुरा नागपुर फ़ोन : **0712 -2737290**

अजमेर शरीफ़ : **19 / 216** फलाहे दारैन मस्जिद. नल्ला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह,

E.mail:ilmia26@yahoo.com

: तम्बीह :
किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ؕ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ؕ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ؕ

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाइ دَامَتۡ بَرَکَاتُهُمُ الۡعَالِيَه

الحمد لله علٰى اِحۡسَانِهٖ وَ بِفَضۡلِ رَسُوۡلِهٖ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह़्याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** भी है जो ***दा'वते इस्लामी*** के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تعالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है । इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه

(2) शो'बए दर्सी कुतुब

(3) शो'बए इस्लाही़ कुतुब

(4) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब

(5) शो'बए तराजिमे कुतुब

(6) शो'बए तख़्रीज

''**अल मदीनतुल इल्मिय्या**'' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल्ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वुस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ''**दा'वते इस्लामी**'' की तमाम मजालिस ब शुमूल ''**अल मदीनतुल इल्मिय्या**'' को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

र-मज़ानुल मुबारक सिने 1425 हिजरी

पेशे लफ़्ज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

यक़ीनन सालिहीन के वाक़िआ़त व ह़ालात में अहले नज़र के लिये इ़ब्रत व बसीरत का कसीर सामान होता है. उन के ज़िक्र से दिलों को रोशनी, रूहों को ताज़गी और फ़िक्रो नज़र को बालीदगी मिलती है. येही वजह है कि क़ुर्आने करीम ने जहां असरारो अह़काम और शराएअ़ व क़वानीन की उ़क़्दा कुशाई की है, वहीं अम्बियाए साबिक़ीन और गुज़श्ता अक़्वाम के ह़ालात व वाक़िआ़त भी बड़ी असर अंगेज़ी और फ़य्याज़ी के साथ बयान किये हैं और हमारे लिये उन्हें सामाने इ़ब्रत व बसीरत क़रार दिया है, चुनान्चे इर्शाद होता है:

لَقَدْ كَانَ فِیْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान: बेशक उन के वाक़िआ़त में अहले अ़क़्ल के लिये इ़ब्रत है.

बिला शुबा ह़याते सालिहीन का लम्ह़ा लम्ह़ा अपने अन्दर बे पनाह कशिश रखता है. इन की ज़िन्दगी का क़ाबिले तक़्लीद पहलू येह है कि आख़िरत की रा'नाइयां, जन्नत की बहारें, उ़क़्बा की मुसर्रतें और हुस्ने ह़क़ीक़ी के दीदार की लज़्ज़तें उन के क़ल्बो निगाह में बसी हुई होती हैं. इस लिये येह अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की जुस्तुजू में लगे रहते हैं और दुन्या में एक मुसाफ़िर की सी ज़िन्दगी बसर करते हुए जहाने आख़िरत को अपने पेशे नज़र रखते हैं. उस जहाने बाक़ी की आबाद कारी के लिये वोह इसी त़रह़ मुन्हमिक नज़र आते हैं जैसे कोई ज़ाहिर शनास इन्सान इस दुन्याए फ़ानी की आबाद कारी के लिये हर लम्ह़ा बे क़रार दिखाई देता है और जिस त़रह़ उसे ख़ौफ़ होता है कि अगर मैं ने ज़रा भी ग़फ़्लत की तो अपने हम सरों से बहुत पीछे हो जाऊंगा, थोड़ी सी चूक हुई तो मेरा मु-तवक़्क़अ़ नफ़्अ़ ख़सारे में तब्दील हो जाएगा. इसी त़रह़ इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या को येह ख़ौफ़

लाहिक़ होता है कि अगर वोह दुन्यावी लज़्ज़ात और आसाइशों में खो गए तो अ-बदी ज़िन्दगी वीरान हो सकती है. वोह अ-बदी ज़िन्दगी जो कभी ख़त्म होने वाली नहीं, साठ या सत्तर साला दुन्यावी ज़िन्दगी की रा'नाइयों, लज़्ज़तों और आसाइशों में फंस कर उस ह़याते दाइमी को बे रौनक़ व बे कैफ़ बनाना यक़ीनन बे अ़क़्ली और जुनून है. फ़िक्रे आख़िरत उन्हें ऐसा बेताब सिफ़त बना देती है कि उन्हें न तो यहां के आ़लीशान मह़ल्लात भाते हैं और न ही सीमो ज़र की खनक उन्हें फ़रेफ़्ता करती है. दर अस्ल इन की निगाहें तो अपने ख़ालिक़ व मालिक की रिज़ा पर जमी होती हैं और वोह इन तमाम अश्या से ज़ियादा पुर शकोह और जन्नती ने'मतों के मु-तमन्नी होते हैं. येही वोह हस्तियां हैं जिन का ज़िक्र भी बाइसे नुज़ूले रह़मत है. जैसा कि ह़ज़रते सुफ़्यान बिन ऐ़निया رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं: "عِنۡدَ ذِکۡرِ الصَّالِحِیۡنَ या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है."

(ह़िल्यतुल औलिया, रक़म :10750, स. 335, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत)

इस बात में कोई शक नहीं कि येह आ'ला व पाकीज़ा तर्ज़े ज़िन्दगी इन्ही नुफ़ूसे क़ुदसिय्या का ह़िस्सा है हम जैसे बे मायों के लिये इन के नक़्शे क़दम पर चलना ना मुम्किन नहीं तो बे ह़द दुश्वार ज़रूर है. लेकिन अगर हम इन पाकीज़ा हस्तियों के नक़्शे क़दम नहीं चल सकते तो अपनी निय्यतों और अपने मुआ़-मलात की दुन्या तो संवार सकते हैं, मौलाए ह़क़ीक़ी की नाराज़गी मोल ले कर अपने नफ़्स की ख़ुशनूदी के सोदों से तो बाज़ रह सकते हैं, ह़लाल व ह़राम की तमीज़, आख़िरत के नफ़्अ़ व नुक़्सान और अपने रब्बे क़दीर के ग़ज़ब व रिज़ा का ख़याल तो रख सकते हैं.

इन तमाम बातों के पेशे नज़र कुछ अ़र्सा क़ब्ल अचानक इन्तिक़ाल कर जाने वाले सालेह़ व मुत्तक़ी आ़लिमे दीन और तब्लीग़े क़ुर्आनो सुन्नत की आ़लमगीर तह़रीक दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी

मज्लिसे शूरा के रुक्न अल हाफ़िज़ अल क़ारी अल मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِيّ के मुख़्तसर हालाते ज़िन्दगी बनाम ''मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِيّ'' पेश किये जा रहे हैं. मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِيْ दीने इस्लाम के मुख़्लिस और पुर जोश मुबल्लिग़ थे. ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है'' के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त आप ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में हिन्द, दुबई और पाकिस्तान के तमाम सूबों पंजाब,सरह़द, बलूचिस्तान, सिन्ध और कश्मीर का सफ़र भी किया. ज़ोह्दो वरअ़ और तक़्वा व परहेज़ गारी में अपनी मिसाल आप थे और इस ह़दीसे पाक के मिस्दाक़ थे: ''كُنْ فِي الدُّنْيَا كَاَنَّكَ غَرِيْبٌ'' या'नी दुन्या में इस त़रह़ रहो कि गोया तुम मुसाफ़िर हो.''

(सह़ीहुल बुख़ारी, अल ह़दीस: 6416, जि. 4, स. 223, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत)

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِيّ के बारे में मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये किताब का मुत़ा-लआ़ जारी रखिये. इस किताब को दा'वते इस्लामी की मज्लिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बए इस्लाह़ी कुतुब के ज़िम्मादारान ने मुरत्तब किया है. इस किताब को न सिर्फ़ ख़ुद पढ़िये बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों को इस के मुत़ा-लआ़ की तरग़ीब दे कर सवाबे जारिया के मुस्तह़क़ बनिये. अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें ''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश'' करने के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने और म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मज्लिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए. اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शो'बए इस्लाह़ी कुतुब (मज्लिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

नंबर शुमार	उ़न्वान	सफ़ह़ा
1	विलादत और इब्तिदाई ता'लीम :	14
2	दा'वते इस्लामी से किस त़रह़ मु-तअस्सिर हुए :	15
3	अ़ह्दे त़ालिबे इ़ल्मी का किरदार :	15
4	तक़्रीबन चार हज़ार फ़तावा लिखे :	16
5	सफ़रे मदीना की सआ़दत :	17
6	मर्कज़ी मज्लिसे शूरा में शुमूलिय्यत :	18
7	निगराने शूरा के तह़रीरी तअस्सुरात :	18
8	तह़सील मुशा-वरत के निगरान के तअस्सुरात :	19
9	मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की इन्फ़िरादी कोशिशें :	19
10	गुलशने इक़्बाल के ज़िम्मादार के तअस्सुरात :	20
11	आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र :	22
12	म-दनी इन्आ़मात के आ़मिल :	25
13	हर दम म-दनी काम के लिये तय्यार :	26
14	म-दनी मश्वरे का अन्दाज़ :	26
15	सदाए मदीना :	27
16	अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत :	27
17	दर्सो बयान :	28
18	दुबला पतला मुबल्लिग़ :	28
19	इन्फ़िरादी कोशिश :	30
20	क़ुफ़्ले मदीना :	32
21	इत़ाअ़ते अमीर :	34
22	म-दनी मर्कज़ की इत़ाअ़त :	35

नंबर शुमार	उ़न्वान	सफ़हा
23	हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत :	35
24	इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :	36
25	अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ से महब्बत :	37
26	सब्र की आ़दत :	38
27	हर काम में नर्मी :	38
28	खाने में ऐ़ब न निकालना :	40
29	किफ़ायत शिआ़री :	40
30	सादगी :	40
31	सवाबे जारिय्या के मु-तमन्नी :	41
32	सवाबे आख़िरत के ह़रीस :	41
33	तिलावते क़ुरआन का ज़ौक़ :	42
34	पर्दे की एह़तियातें :	42
35	अपनी बच्ची और उस की अम्मी की तरबिय्यत :	43
36	शौक़े मुत़ा-लआ़ :	44
37	यादे मौत :	44
38	क़नाअ़त पसन्दी :	45
39	घर वालों की आप से महब्बत :	45
40	"घर में म-दनी माह़ोल" के 15 म-दनी फूल	46
41	वक़्त की पाबन्दी :	48
42	अन्दाज़े तदरीस :	50
43	शहीद मस्जिद में इमामत :	51
44	नमाज़ों का एह़तिमाम :	52
45	आ़जिज़ी :	55

नंबर शुमार	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
46	मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَيْهِ الرَّحْمَة बतौरे अ़लाक़ाई निगरान :	56
47	मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی की रेह़लत :	57
48	वफ़ात की कैफ़िय्यात :	57
49	ईसाले सवाब का आग़ाज़ :	58
50	तख़्ताए गुस्ल पर मुस्कराहट :	58
51	ना'त ख़्वानी के दौरान होंटों की जुम्बिश :	59
52	होंट हिलने लगे	59
53	बानिये दा'वते इस्लामी की आमद	60
54	मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की नमाज़े जनाज़ा	61
55	नमाज़े जनाज़ा के बा'द की रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़	62
56	जनाज़ा ब सूए सह़राए मदीना	64
57	तदफ़ीन की कैफ़िय्यात	65
58	क़ब्र पर अज़ान	66
59	दा'वते इस्लामी हरगिज़ मत छोड़िये !	67
60	तजदीदे अ़ह्दे वफ़ा	68
61	बा'दे तदफ़ीन पुर सोज़ दुआ़	69
62	मज़ार पर 12 घन्टे रुकने वाले	72
63	मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَيْهِ الرَّحْمَة का तीजा	73
64	बाबुल इस्लाम के इज्तिमाअ़ में दुआ़ के अल्फ़ाज़	75
65	ईसाले सवाब :	75
66	म-दनी बहारें	76
67	म-दनी गुज़ारिश	79

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ، اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ،

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत,** आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले ''**ज़ियाए दुरूदो सलाम**'' में फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नक़्ल फ़रमाते हैं :

''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसा-फ़ह़ा करें और नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं.'' (मुस्नदो अबी या'ला, रक़मुल ह़दीस : 2901, जि. 3, स. 95)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

विलादत और इब्तिदाई ता'लीम :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِيّ की विलादत 26 अगस्त 1976 ई. माहे र-मज़ानुल मुबारक में लाड़काना (जिस का नाम अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने आप की वफ़ात के बा'द ''फ़ारूक़ नगर'' रख दिया है) में हुई. स्कूल से वापसी पर वालिदा को क़ुर्आने पाक सुनाया करते थे. इब्तिदाई ता'लीम व ह़िफ़्ज़ दारुल उ़लूम अह़सनुल ब-रकात (ह़ैदरआबाद सिन्ध) से किया. फ़ारूक़ नगर (लाड़काना) से ह़ैदरआबाद और फिर 1989 ई. में बाबुल मदीना (कराची) मुन्तक़िल हो गए.

दा'वते इस्लामी से किस त़रह़ मु-तअस्सिर हुए :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ाजी मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त़्त़ारिय्युल म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى ने दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्तगी के बारे में ख़ुद कुछ इस त़रह़ से बताया था कि मैं ने जब पहली मर्तबा सुन्नतों भरे हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में शिर्कत की तो वहां की जाने वाली इख़्तितामी रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ सुन कर बहुत मु-तअस्सिर हुवा बस इस दुआ़ का अन्दाज़ पसन्द आ गया. इस के बा'द दा'वते इस्लामी की मन्ज़िलें तै़ होती चली गईं. اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ

अ़ह्दे त़ालिबे इल्मी का किरदार :

बाबुल मदीना कराची में दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना में 1995 ई. में दाख़िला लिया. आप अपनी आ़दातो अत़्वार में दीगर त़-लबा से मुमताज़ है़सियत के ह़ामिल थे. आप के साथ पढ़ने वाले म-दनी उ़-लमा का बयान है कि "दौराने त़ालिबे इल्मी जब पढ़ाई के दरमियानी वक़्फ़े में हम लोग चाय वग़ैरा पीने के लिये होटल में चले जाते तो येह इस वक़्फ़े से फ़ाएदा उठाते हुए क़ुरआने मजीद की तिलावत शुरूअ़ कर देते. एक दफ़्आ़ इस्तिफ़्सार पर फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं रोज़ाना एक मन्ज़िल की तिलावत करता हूं (क़ुरआने पाक की सात मन्ज़िलें हैं इस त़रह़ आप सात दिन में क़ुरआने मजीद ख़त्म कर लिया करते थे) ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना बहुत मज़बूत था, ख़ुद गुफ़्तुगू शुरूअ़ करने के बजाए अक्सर सामने वाले के आग़ाज़े कलाम के मुन्तज़िर रहते थे. कभी क़ह्क़हा लगाते नहीं देखा गया, अलबत्ता उन के लबों पर मुस्कराहट ज़रूर देखी जाती. اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ येह ह़ाफ़िज़े क़ुरआन भी थे और इनका ह़िफ़्ज़ इतना मज़बूत़ था कि तमाम असातिज़ा दौराने सबक़ आयत आ जाने पर इन ही से इस के बारे में पूछा करते थे, हमारी नज़र

से ऐसा मज़बूत ह़ाफ़िज़े वाला ह़ाफ़िज़ कभी नहीं गुज़रा. कभी असातिज़ा से ग़ैर ज़रूरी सुवालात नहीं किये, जब कभी सुवाल किया तो हर एक उस सुवाल में दिल चस्पी लेता था और उस सुवाल को अहम्म तरीन क़रार देता था. हम द-रजा इस्लामी भाइयों से किसी मस्अले पर इख़्तिलाफ़े राय होने की सूरत में अपने मौक़िफ़ को पुर ए'तिमाद त़रीक़े से बयान ज़रूर करते थे लेकिन किसी की तह़क़ीर या तजहील हरगिज नहीं फ़रमाते थे. दौराने त़ालिबुल इल्मी जब पिरियड ख़ाली होता कुर्आने मजीद की तिलावत शुरूअ़ फ़रमा देते उन के हम द-रजा इस्लामी भाइयों ने उन से मु-तअस्सिर हो कर उन से तजवीदो क़िराअत के उसूलों के मुत़ाबिक़ कुर्आने पाक पढ़ना शुरूअ़ कर दिया क्यूंकि येह ह़ाफ़िज़े कुर्आन होने के साथ साथ एक अच्छे क़ारी भी थे. उन ही में से एक इस्लामी भाई का कहना है कि मैं पढ़ने के साथ साथ शाम के वक़्त तदरीस भी करता था. जब कभी भी मैं ने उन से किसी सबक़ के बारे में दर्याफ़्त किया उन्हों ने कभी बेज़ारी का इज़्हार नहीं किया बल्कि बहुत शौक़ और लगन से मेरे सुवालात के जवाबात दिये. उन के किरदार की बुलन्दी की बिना पर हमारा उन के बारे में येही हुस्ने ज़न है कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली थे." (इन्तिहा)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

तक़्रीबन चार हज़ार फ़तावा लिखे :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِیّ ने फ़तवा नवेसी की तरबिय्यत जामिआ़ ग़ौसिया र-ज़विय्या सख्खर (बाबुल इस्लाम सिन्ध) से ली 15 शा'बान, 1421 हि. ब मुत़ाबिक़ 13 नवम्बर 2001 ई. को

पहला फ़तवा लिखा. पहले पहल तक़रीबन एक साल दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत ''जामेअ़ मस्जिद कन्ज़ुल ईमान'' बाबरी चोक (गुरू मन्दिर) बाबुल मदीना (कराची) में रहे, और तक़रीबन 500 फ़तावा लिखे. इस के बा'द तक़रीबन तीन साल दारुल इफ़्ता नूरुल इरफ़ान ''जामेअ़ मस्जिद सय्यिद मा'सूम शाह बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِیْ'' नज़्द पोलीस चोकी, खारादर, बाबुल मदीना (कराची) में रहे और तक़रीबन 2000 फ़तावा लिखे. फिर तक़रीबन 11 माह मक्तब मज्लिसे इफ़्ता (आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना) में रहे, यहां आप के फ़तावा की ता'दाद 1500 है. इस त़रह़ आप के फ़तावा की ता'दाद तक़रीबन 4000 है. इस के इलावा तफ़्सीरे जलालैन का तक़रीबन 1200 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल अ़-रबी ह़ाशिया भी लिखा और तफ़्सीरे क़ुर्आन ''सिरातुल जिनान'' के छ़ पारों पर भी काम कर चुके थे.

सफ़रे मदीना की सआ़दत :

7 फ़रवरी 2002 ई. में अपने मुर्शिदे कामिल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के हमराह ह़ज व ज़ियारते मदीनए मुन्व्वरह की सआ़दत से मुशर्रफ़ हुए. जब अरकाने ह़ज अदा करने के बा'द म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी की सुहानी घड़ियां आईं तो आप के मुर्शिदे कामिल ने जब गुम्बदे ख़ज़रा की ज़ियारत कराने के लिये आप के झुके हुए सर को ऊपर उठाया तो आप ने अपनी मुर्शिदे कामिल مَدَّ ظِلُّہُ الْعَالِی की आंखों की त़रफ़ देखना शुरूअ़ कर दिया, यूं गोया आप के मुर्शिदे कामिल गुम्बदे ख़ज़रा को देख रहे थे और मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی उन की आंखों में गुम्बदे ख़ज़रा के नज़ारे कर रहे थे.

मुर्शिद की आंखों से रौज़े को मैं देखूं
और गुम्बदे ख़ज़रा के जल्वे को मैं देखूं

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो.

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

मर्कज़ी मज्लिसे शूरा में शुमूलिय्यत :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 2000 ई. में तब्लीग़े कुर्आनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मज्लिसे शूरा के रुक्न बने और ता दमे ह़यात मज्लिसे शूरा में शामिल रहे, इस के साथ साथ आप दा'वते इस्लामी की मज्लिसे तह़क़ीक़ाते शरइ़य्या, मज्लिसे इफ़्ता, मज्लिसे जामिआ़तुल मदीना, मज्लिसे इजारा, मज्लिसे म-दनी मुज़ाकरा के निगरान और मज्लिसे मालियात, मज्लिस बराए इलेक्ट्रोनिक मीडिया, मज्लिसे मक-त-बतुल मदीना, पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना, बाबुल मदीना मुशा-वरत के रुक्न और तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह (मुफ़्ती कॉर्स) के उस्ताज़ भी थे.

निगराने शूरा के तह़रीरी तअस्सुरात :

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इन्तिक़ाल के बा'द निगराने शूरा مَدَّ ظِلُّہُ الْعَالِی ने तह़रीरी बयान दिया कि "जिस दिन से मर्ह़ूम ने रुक्ने शूरा की ह़ैसियत से म-दनी मश्वरे में शिर्कत फ़रमाई हर दिल अ़ज़ीज़ बन गए. आप म-दनी मश्वरों में वक़्त की पाबन्दी फ़रमाते. मैं अपना ह़ाल क्या बताऊं कि बत़ौरे निगरान मशहूर तो मैं ही रहा मगर दर अस्ल मुफ़्ती साहिब ही निगरानी फ़रमाते रहे, आह ! अब हम अपने मश्वरों में (शर-ई राहनुमाई के लिये) हाथों हाथ किस की त़रफ़ रुजूअ़ करेंगे कि अराकीने शूरा घन्टों किसी अहम्म मुआ़-मले पर बह़स करते और जब

किसी नुक्ते को तै करने की पोज़ीशन में आते तो मुफ़्ती साहिब की त़रफ़ रुजूअ़ करते उन की "हां" पर हमारा फ़ैसला मौक़ूफ़ होता, और जब किसी नुक्ते पर इख़्तिलाफ़े राय फ़रमाते तो अ़क़्ली व नक़्ली दलाइल से क़ाइल करते और कभी ख़ुद क़ाइल हो जाते."

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तह़सील मुशा-वरत के निगरान के तअस्सुरात :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तन्ज़ीमी कारकर्दगी भी मिसाली थी. उन की म-दनी तह़सील गुलशने अ़त्तार की मुशा-वरत के निगरान का बयान है कि :

"मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जिन दिनों अ़लाक़ाई निगरान थे उन की कारकर्दगी तन्ज़ीमी कामों में भी सब निगरान इस्लामी भाइयों से बेहतर थी. उन का कारकर्दगी फ़ॉर्म बिन मांगे सब से पहले मिल जाता था."

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की इन्फ़िरादी कोशिशें :

आप पहले पहल कन्ज़ुल ईमान मस्जिद के क़रीबी अ़लाक़े पटेल पाड़ा में रिहाइश पज़ीर रहे. इन के अ़लाक़े (ए'जाज़ कॉलोनी, लस्बेला चोक) के इस्लामी भाइयों का बयान है कि ● "मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ाजी मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की इन्फ़िरादी कोशिश से कई इस्लामी भाई नमाज़ी बने, अपने चेहरे पर दाढ़ियां सजा लीं और म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए. ● येह बिला नाग़ा सदाए मदीना लगाया करते थे और अपनी रिहाइश गाह वाक़ेअ़ पटेल पाड़ा से बिलाल मस्जिद (लस्बेला चोक) तक **सदाए मदीना** लगाते हुए आया करते थे. ● **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत**

में शिर्कत फ़रमाते ● **मद्रसतुल मदीना** बराए बालिग़ान पढ़ाते थे ● एक मर्तबा हमारे सामने अन्दरूने सिन्ध से आने वाले 50 से 60 कुफ़्फ़ार इन के हाथ पर मुसल्मान हुए ● इन की तरग़ीब पर मु-तअ़द्दद इस्लामी भाइयों ने अपने बच्चों को ह़ाफ़िज़े क़ुर्आन बनाया ● उस अ़लाक़े में बा'ज़ नौ जवान ज़बान की तेज़ी की वजह से कुफ़्रिय्या कलिमात भी बोल जाते थे, आप ने उन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** की और तजदीदे ईमान के बारे में उन का ज़ेह्न बनाया तो वोह ताइब हो गए और ज़बान की एह़तियात़ करने वाले बन गए ● जितना अ़र्सा हमारे अ़लाक़े में रहे, कभी अपनी ज़ात के लिये किसी से सुवाल नहीं किया ● हम ने उन्हें कभी फ़ुज़ूल गुफ़्तुगू करते नहीं देखा ● बहुत मिलनसार थे ● कभी मु-तकब्बिराना अन्दाज़ में गुफ़्तुगू करते नहीं देखा न दर्से निज़ामी से पहले न बा'द में ● ईसार का जज़्बा इतना था कि एक मर्तबा सुन्नतों भरे बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ में तमाम इस्लामी भाइयों को शामियाने के अन्दर दरियों पर सुलाया, सुब्ह़ जब इस्लामी भाई बेदार हुए तो येह देख कर ह़ैरान रह गए कि फ़ारूक़ भाई शामियाने से बाहर खुले आस्मान तले ज़मीन पर ही सोए हुए हैं और उन के कपड़ों पर मिट्टी लगी हुई है ● एक मर्तबा हम ने इन के साथ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया. दिसम्बर की शदीद सर्द रात में हम ने देखा कि रात के तीन बजे के लगभग फ़ारूक़ भाई ग़ुस्ल कर के आ रहे हैं, इस पर इस्लामी भाई फ़िक्र मन्द हो गए कि कहीं इन को सर्दी न लग जाए और इशारों किनायों में ग़ुस्ल का मक़्सद पूछा तो कुछ इस त़रह़ से फ़रमाया : मुझे ग़ुस्ल की कोई शर-ई ह़ाजत न थी, येह नफ़्स तंग करता रहता है इस लिये ठन्डे पानी से ग़ुस्ल किया है ● हमारा हुस्ने ज़न है कि अगर येह मज़ीद कुछ अ़र्सा हमारे अ़लाक़े में रह जाते तो वहां इमामों की मज़ीद बहारें आ जातीं।"

मर्कज़ी मज्लिसे शूरा के निगरान مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی का तह़रीरी बयान है कि "इन के साथ सफ़रे हिन्द इन्तिहाई यादगार सफ़र रहा. इन की मौजूदगी जहां **शर-ई रहनुमाई** का बाइ़स थी वहीं **म-दनी इन्आ़मात** पर उभारने वाली भी थी. इस दौरान कु़र्आने पाक की कस्रत से तिलावत और तहज्जुद में उठने का मा'मूल रहा और **सदाए मदीना** का ऐसा मा'मूल देखा जिस की मिसाल पेश करना मुश्किल है. जहां किसी तन्ज़ीमी और शर-ई रहनुमाई की ह़ाजत होती फ़ौरन ह़ल इर्शाद फ़रमा देते, दौराने सफ़र **आंखों का कु़फ़्ले मदीना** ऐसा मिसाली था कि इन की निगाहों को अक्सर झुका हुवा ही देखा गया."

गुलशने इक़्बाल के ज़िम्मादार के तअस्सुरात :

आप के अ़लाके़ गुलशने इक़्बाल (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई का बयान है, "जिन दिनों मेरी कुछ तन्ज़ीमी ज़िम्मादारियां बढ़ाई गई थीं तो उन दिनों ह़ाजी फ़ारूक़ भाई मेरी हौसला अफ़्ज़ाई के लिये मेरे साथ मुख़्तलिफ़ ज़ैली ह़ल्क़ों में नमाज़े फ़ज्र अदा करते, और हम मिल जुल कर नए नए इस्लामी भाइयों से मिलते और **इन्फ़िरादी कोशिश** करते.

र-मज़ानुल मुबारक में मो'तकिफ़ीन के साथ वक़्त गुज़ारने का सिल्सिला होता था. इस में मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी मुख़्तलिफ़ ज़ैली ह़ल्क़ों की जुदा जुदा मस्जिदों के लिये वक़्त दिया करते और वहां तशरीफ़ ले जा कर सुन्नतों भरे बयानात फ़रमाते और ज़िक्रो दुआ़ करवाते. मो'तकिफ़ीन और वहां के इस्लामी भाइयों की ख़्वाहिश येह होती कि आज रात फ़ारूक़ भाई हमारे ह़ल्के़ में आएं. हमारे अ़लाके़ में इन्फिरादी कोशिश के लिये जितना मुफ़्ती फ़ारूक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه पैदल चले हैं शायद ही कोई उतना चला हो. जिन दिनों आप के पास मोटर

साइकिल नहीं थी और आप अ़लाक़ाई निगरान हुवा करते थे तो आप पैदल ही आमदो रफ़्त करते और मोटर साइकिल वालों के मुक़ाबले में पूरे वक़्त पर आ जाया करते. वाक़ेई ! आप का म-दनी काम करने का अन्दाज़ इन्तिहाई क़ाबिले रश्क था.''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले म-दनी क़ाफ़िलों से बड़ी मह़ब्बत थी चुनान्चे इस की एक झलक मुला-ह़ज़ा हो :

मुह़र्रमुल ह़राम 1427 हि. के मुक़द्दस माह में पाकिस्तान के तक़रीबन तमाम जामिआ़त में तशरीफ़ ले गए और वापसी पर बाबुल इस्लाम (सिन्ध, सूबाई मुशा-वरत) के निगरान (जो रुक्ने शूरा भी हैं उन) को फ़ोन किया कि मैं फ़ुलां दिन आ रहा हूं मेरा म-दनी क़ाफ़िला रह न जाए लिहाज़ा म-दनी क़ाफ़िला अगर मुझे तय्यार मिल जाए तो मैं उस में सफ़र कर सकूंगा.

आप के घर के क़रीब रिहाइश पज़ीर इस्लामी भाई का बयान है कि आप म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र के शुरूअ़ से ही आ़दी थे. बहुत पहले की बात है कि एक मर्तबा म-दनी क़ाफ़िला तय्यार न हो सका क्यूंकि मुक़र्ररह वक़्त पर इस्लामी भाई न पहुंच पाए तो मुफ़्ती फ़ारूक़ म-दनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِیّ मुझे तन्हा ही ले कर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार हो गए और हम दोनों इस्लामी भाई क़ाफ़िले के लिये रवाना हो गए.

गुलशने इक़्बाल बाबुल मदीना (कराची) के एक ज़िम्मादार

इस्लामी भाई का तह़रीरी बयान कुछ इस त़रह़ से है कि

मेरा मुशा-हदा है कि मुफ़्ती फ़ारूक़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ त़ालिबे इ़ल्मी के दौर में भी हर माह म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया करते थे ह़ालांकि उस दौर में हर दूसरे माह म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरकीब हुवा करती थी.

اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे भी उन के साथ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की सआ़दत मिली. येह म-दनी क़ाफ़िले के जदवल पर बहुत पाबन्दी से अ़मल किया करते थे. येह अपने अ़मल से दूसरों को अ़मल की तरग़ीब देते थे चुनान्चे जब येह ख़ुद जदवल पर अ़मल करते थे दीगर शु-काए क़ाफ़िला भी जदवल पर ख़ुश दिली से अ़मल किया करते थे. येह शु-रकाए क़ाफ़िला की ख़ुद ख़िदमत भी करते और तरबिय्यत भी किया करते थे.

इस दौरान जब बाज़ार से रोटी, चीनी या कोई और सामान मंगवाते तो किसी न किसी बा ब-र-कत निस्बत से मंगवाते, म-सलन ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की निस्बत से ग्यारह रोटियां, चार यार رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم की निस्बत से चार प्लेटें, **وعلیٰ ھذاالقیاس**

اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जब भी म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करते तो क़ाफ़िले का वक़्त ख़ुद भी पूरा करते और दीगर शु-रकाअ से भी करवाया करते थे. और इस तरह ज़ेह्न बनाया करते कि डॉक्टर्ज़ की दी हुई दवाई का कोर्स अगर पूरा न करें तो फ़ाएदा नहीं होता.

एक मर्तबा इन के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ से 30 दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करना नसीब हुवा. इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर शदीद बारिश हुई और हर त़रफ़ कीचड़ नज़र आ रही थी. इत्तिफ़ाक़ देखिये कि म-दनी

क़ाफ़िले के दीगर शु-रकाअ से हमारी मुलाक़ात न हो पाई. उन्हों ने मुझे साथ लिया और चलना शुरूअ़ कर दिया. मैं परेशान था कि दीगर शु-रकाए क़ाफ़िला से हमारी मुलाक़ात क्यूं कर हो पाएगी. इस लिये मैं ने गुमान किया कि शायद हम सफ़र न कर पाएं मगर मुफ़्ती फ़ारूक़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाने लगे कि अपना तो ज़ेहन बनता है कि एक दफ़्आ़ 30 दिन सफ़र के इरादे से निकल आए हैं तो अगर 30 दिन एक ही मस्जिद में गुज़ारने पड़ें तो गुज़ार लूंगा मगर 30 दिन से पहले घर नहीं जाऊंगा. बहर ह़ाल फिर क़ाफ़िले वाले मिल गए और यूं हम म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने में काम्याब हो गए. اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ عَلٰی ذٰلِکَ गुलशने इक़्बाल बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि

''**मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी** رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ म-दनी क़ाफ़िलों से क़ौलन व अ़-मलन बहुत प्यार किया करते थे। आप हर एक को हर बात में म-दनी क़ाफ़िले की दा'वत दिया करते थे. अगर उन से कोई मस्अला पूछा जाता तो मस्अला बयान फ़रमा कर कहते कि मज़ीद मा'लूमात का जज़्बा बढ़ाने के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये। नए सब इस्लामी भाइयों को म-दनी क़ाफ़िले की दा'वत दिया करते थे। म-दनी मश्वरों में भी अक्सर येह शे'र सुनाया करते :

फ़ना इतना तो हो जाऊं मैं क़ाफ़िले की तय्यारी में
जो मुझ को देख ले वोह क़ाफ़िले के लिये तय्यार हो जाए

गुलशने इक़्बाल बाबुल मदीना (कराची) ही के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई का बयान है :

''बाबुल मदीना के अक्सर इस्लामी भाइयों की येह ख़्वाहिश होती है कि 12 रबीउ़न्नूर शरीफ़ बाबुल मदीना (कराची) ही में गुज़ारें.

मगर मुफ़्ती फ़ारूक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی उस दिन भी म-दनी क़ाफ़िले की तरकीब बनाया करते. एक मर्तबा ऐसा भी हुवा कि ख़ुद रात ही को म-दनी क़ाफ़िले में शहदाद पूर (बाबुल इस्लाम सिन्ध) चले गए और वहां जा कर शबे विलादते मुबा-रका के इज्तिमाए़ मीलाद में शिर्कत की और हमें जुलूस वाले दिन सुब्ह बा'दे फ़ज्र आने का कहा. कई मर्तबा ऐसा हुवा कि बाबुल मदीना (कराची) में होने वाले इज्तिमाए़ मीलाद में सारी रात गुज़ार कर बा'दे फ़ज्र म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया और शहदाद पूर में दीगर शु-रकाए म-दनी क़ाफ़िला के साथ म-दनी जुलूस में शिर्कत करवाई. फिर उस म-दनी क़ाफ़िले में शु-रकाअ को ईदी में दीदारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मांगने का ज़ेह्न देते, और येही ज़ेह्न ईदुल फ़ित्र की चांद रात या ईद के दिन सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िले में दिया करते."

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

म-दनी इन्आ़मात के आ़मिल :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा "म-दनी इन्आ़मात" पर भी पाबन्दी से अ़मल किया करते थे. उन के घर वालों का बयान है कि जब कभी रात को किसी काम से इन के कमरे में जाना हुवा तो अक्सर देखा जाता कि इन के पास म-दनी इन्आ़म का कार्ड होता और येह उस पर निशान लगा रहे होते.

बाबुल मदीना (कराची) की मज्लिसे म-दनी इन्आ़मात के ज़िम्मादार का बयान है कि मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मा'मूल

था कि हर माह पाबन्दी से सब से पहले म-दनी इन्आ़मात का कार्ड जम्अ़ करवाते.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

हर दम म-दनी काम के लिये तय्यार :

गुलशने इक़्बाल बाबुल मदीना (कराची) के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई का बयान है कि मैं ने मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को हर वक़्त म-दनी काम के लिये तय्यार पाया. कोई बयान के लिये कहता तो फ़रमाते : मैं ह़ाज़िर हूं ,कोई जुमुआ़ पढ़ाने के लिये कहता तो जवाब देते : मैं ह़ाज़िर हूं , कभी येह नहीं कहा कि मुझे पढ़ना होता है, मुत़ा-लआ़ करना है, इम्तिह़ानात हो रहे हैं, लेकिन इस के साथ साथ उन का पढ़ाई का मे'यार भी बहुत शानदार था.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

म-दनी मश्वरे का अन्दाज़ :

म-दनी मश्वरे में वक़्त की पाबन्दी से शरीक होना, वक़्त पर शुरूअ़ करना और वक़्त पर ख़त्म कर देना, मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़ासिय्यत थी. मश्वरे के दौरान मुफ़्ती फ़ारूक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहुत ही सादा अन्दाज़ में म-दनी मश्वरा लेते. हर इस्लामी भाई की राय सुनते और अपनी राय को किसी के मश्वरे की ताईद में पेश करते तो इस से उस का दिल भी ख़ुश हो जाता और नुक्ता भी त़ै पा जाता.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

सदाए मदीना :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी हाफ़िज़ मुहम्मद फ़ारूक़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का मा'मूल था कि अक्सर मुसल्मानों को नमाज़ के लिये जगाने के लिये सदाए मदीना लगाया करते थे. अगर कभी किसी ''जामिअ़तुल मदीना'' में रुकने का इत्तिफ़ाक़ होता तो त़-लबा को ख़ुद सदाए मदीना लगा कर नमाज़ के लिये उठाया करते.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمِیۡن بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِیۡن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत :

मज्लिसे म-दनी क़ाफ़िला बाबुल मदीना (कराची) के रुक्न इस्लामी भाई का बयान है कि ''हम चन्द इस्लामी भाई जामेअ़ मस्जिद सय्यिद मा'सूम शाह बुख़ारी ख़ारादर बाबुल मदीना कराची के अत़राफ़ में नेकी की दा'वत देने के लिये गए तो इसी मस्जिद से मुल्हिक़ दारुल इफ़्ता नूरुल इरफ़ान में मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से मुलाक़ात का श-रफ़ ह़ासिल हुवा. हम ने उन से इल्तिजा की कि आप भी हमारे साथ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत फ़रमाइये. اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ बिग़ैर किसी ह़ियलो हुज्जत के हमारे साथ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शरीक हो गए. इस के बा'द जब भी हम उन की बारगाह में ह़ाज़िर होते तो येह हमें देखते ही हमारे साथ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत के लिये चल पड़ते.''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمِیۡن بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِیۡن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दर्सो बयान :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه जब खारादर की शहीद मस्जिद में इमामत करवाते थे तो रोज़ाना बा क़ाइदगी से नमाज़े मग़्रिब के बा'द फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स दिया करते और मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर बयान भी करते. आप **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के हुक्म के मुताबिक़ (अपनी डायरी या **अमीरे अहले सुन्नत** के रसाइल से) देख कर बयान किया करते थे. दर्से निज़ामी से पहले भी और बा'द में भी, कभी येह नहीं देखा गया कि आप ने ज़बानी बयान किया हो या कुछ बयान देख कर और कुछ ज़बानी किया हो. नीज़ कभी भी येह तक़ाज़ा नहीं किया कि हफ़्तावार इज्तिमाअ़ या बैनल अक़्वामी व सूबाई सत़्ह के बड़े इज्तिमाआ़त में मेरे बयान की तरकीब की जाए. हां म-दनी मर्कज़ की त़रफ़ से जब भी बयान करने का कहा जाता तो अपनी ख़िदमात पेश करते और वक़्त की पाबन्दी करते हुए उस मक़ाम पर तशरीफ़ ले जाते.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो.** اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

दुबला पतला मुबल्लिग़ :

29 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1427 हि. बा'द नमाज़े मग़्रिब शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से बाबुल मदीना कराची मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर होने वाले मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई ने ह़-लफ़िय्या बताया जिस का ख़ुलासा कुछ यूं है, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से मेरी वाबस्तगी का इब्तिदाई दौर था, त़बीअ़तन मैं इन्तिहाई शरारती था, एक

बार डेरा इस्माईल ख़ान (सरहद, पाकिस्तान) दोस्तों के हमराह जाना हुवा तो मा'लूम हुवा कि बाबुल मदीना कराची से 12 दिन के लिये एक म-दनी क़ाफ़िला तशरीफ़ लाया है और इस जुमा'रात को हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में बाबुल मदीना कराची के मुबल्लिग़ बयान फ़रमाएंगे.

मैं इज्तिमाअ़ में पहुंचा तो देखा कि एक दुबले पतले इस्लामी भाई एक **रिसाला** पढ़ कर सुना रहे हैं. मैं ने किसी से पूछा कि बाबुल मदीना से आए हुए मुबल्लिग़ कब बयान फ़रमाएंगे ? तो उस ने बताया कि जो बयान फ़रमा रहे हैं वोह बाबुल मदीना ही के मुबल्लिग़ हैं. येह सुन कर मैं ने शरारत के अन्दाज़ में कहा कि येह कैसे मौलाना हैं जो देख कर बयान कर रहे हैं ? उस इस्लामी भाई ने मुझे समझाने की कोशिश की मगर मैं ने तन्ज़िया जुम्ले कस कर उस को दिक़ किया. नीज़ मैं उन पर तन्ज़िया जुम्ले कसने लगा और दुबले पतले मौलाना साहिब को भी अपनी शरारत का निशाना बनाने की ठानी. इस इरादे से दूसरे रोज़ मैं अपने दो दोस्तों के साथ उस मस्जिद में जा पहुंचा जहां म-दनी क़ाफ़िला ठहरा हुवा था और छेड़ने के अन्दाज़ में उन दुबले पतले मुबल्लिग़ को मुख़ातब कर के कहने लगा कि रात हम तो बाबुल मदीना वालों की बहुत ता'रीफ़ सुन कर आए थे मगर आप तो **रिसाला** पढ़ कर बयान कर रहे थे ! मेरी इस बात का बुरा मनाने के बजाए उस मुबल्लिग़ के चेहरे पर मुस्कराहट फैल गई और बड़े तह़म्मुल के साथ कहने लगे, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे पीरो मुर्शिद शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه जो ज़माने के वली और दा'वते इस्लामी के अमीर हैं उन के सुन्नतों भरे बयानात सुन कर और म-दनी रसाइल पढ़

कर हज़ारों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो चुका है, चूंकि मेरी अपनी बात में तासीर नहीं लिहाज़ा उन के म-दनी रसाइल से देख कर बयान की कोशिश करता हूं.

उन मुबल्लिग़ के पुर ख़ुलूस अल्फ़ाज़ तासीर का तीर बन कर हम तीनों दोस्तों के जिगर में पैवस्त हो गए और हमारे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई और शरारत के लिये उठे हुए सर इन ख़ुश अख़्लाक़ मुबल्लिग़ की अ़-ज़मत के सामने नदामत से झुक गए. फिर उन्हों ने हमें अच्छी अच्छी निय्यतें करवाईं और हम दा'वते इस्लामी के हो कर रह गए. बा'द में भी उन से हमारा राबिता बाक़ी रहा. आज اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं तह़सील सत्ह़ पर मज्लिसे राबिता बराए उ़-लमाअ व मशाइख़ का ज़िम्मादार हूं और मेरे दोनों दोस्तों में से एक अ़लाक़ाई और एक तह़सील सत्ह़ पर म-दनी क़ाफ़िले के ज़िम्मादार हैं.

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप जानते हैं कि उस सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का रिसाला पढ़ कर सुनाने वाले मुबल्लिग़ कौन थे ! अगर नहीं जानते तो सुनिये वोह और कोई नहीं दा'वते इस्लामी के मर्ह़ूम रुक्ने शूरा मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِیّ थे ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

इन्फ़िरादी कोशिश :

दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मज्लिसे शूरा के निगरान مَدَّ ظِلُّہُ الْعَالِیْ का बयान है कि

"बहुत अ़र्सा पहले की बात है कि मर्हूम मद्रसतुल मदीना कन्ज़ुल ईमान की जाए नमाज़ में इमामत फ़रमाते थे. एक अ़लाक़ाई तनाज़ोअ़ को ह़ल करने के बारे में होने वाले मश्वरे में किसी फ़र्द से कलिमए कुफ़्र निकल गया. आप ने उसी वक़्त तमाम गुफ़्तुगू रुकवा कर किसी मुफ़्ती साहि़ब को फ़ोन किया और मस्अले की तह में गए. फिर क़ाइल को तजदीदे ईमान करवाई और तजदीदे निकाह़ की ताकीद की. उन की इस जुर्अत और ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे ने बहुत मु-तअस्सिर किया."

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपने दारुल इफ़्ता में फ़ोन पर या बिल मुशाफ़ा साइल की बात को तवज्जोह से सुनते हुए आसान और आ़म फ़ह्म अन्दाज़ में जवाब देने के साथ नेकी की दा'वत भी दिया करते थे. चन्द वाक़िआ़त मुला-ह़ज़ा हों.....

(1) दारुल इफ़्ता नूरुल इ़रफ़ान खारादर बाबुल मदीना कराची में एक नौ जवान अक्सर इन के पास आया करता और काफ़ी देर तक वहां बैठा रहता और सुवालात पूछता रहता. मुफ़्ती साहि़ब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ उस के सुवालात के जवाबात भी इर्शाद फ़रमाया करते और उस पर इन्फ़िरादी कोशिश भी किया करते. उन की मुसल्सल इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत से उस नौ जवान ने बा क़ाइ़दा तौ़र पर इ़ल्मे दीन सीखने के लिये जामिअ़तुल मदीना में दाख़िला ले लिया.

(2) इसी त़रह़ दारुल इफ़्ता नूरुल इ़रफ़ान में एक मॉडर्न नौ जवान आप के पास शर-ई मसाइल दरयाफ़्त करने आया करता था. मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की मह़ब्बत भरी इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में वोह मॉडर्न नौ जवान सुन्नतों के सांचे में ढल गया और म-दनी लिबास पहनने लगा और इमामा शरीफ़ बांधने का भी

मा'मूल बना लिया.

(3) एक बड़े मियां दारुल इफ़्ता नूरुल इरफ़ान में आप से शर-ई मसाइल पूछने आए. बेचारे बातूनी बहुत थे, बात करते करते उन के मुंह से कलिमए कुफ़्र निकल गया. मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने फ़ौरन इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन्हें तजदीदे ईमान करवाई और क़िल्लते कलाम (या'नी कम बोलने) की नसीह़त की.

(4) एक मर्तबा दारुल इफ़्ता नूरुल इरफ़ान में दो नौ जवान आपस में नाराज़गी की ह़ालत में आप से कोई शर-ई मस्अला पूछने आए और आप से सारी सूरते ह़ाल बयान की. आप ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए सब से पहले बहारे शरीअ़त से सुल्ह़ के फ़ज़ाइल उन्हें पढ़ कर सुनाए और उन की सुल्ह़ करवाई फिर उन का दर्याफ़्त कर्दा शर-ई मस्अला भी बताया.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

कुफ़्ले मदीना :

आप के साथ काम वाले एक मुफ़्ती साहिब مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِى का बयान है कि

"मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ज़बान का मज़्बूत कुफ़्ले मदीना[1] लगाते थे. मु-तअ़द्दद मर्तबा ऐसा हुवा कि मैं मोटर साइकिल पर दारुल इफ़्ता नूरुल इरफ़ान खारादर से फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना

(1) ग़ैर ज़रूरी बातों से बचने और ख़ामोशी इख़्तियार करने को दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में "ज़बान का कुफ़्ले मदीना" लगाना कहते हैं.

कराची आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ आया लेकिन रास्ते में मुकम्मल ख़ामोश रहे. जब फ़ैज़ाने मदीना पहुंच गए तो सलाम कर के रुख़्सत हो गए. पेट का कुफ़्ले मदीना[2] भी मज़्बूत था, उ़मूमन दिन रात में दो मर्तबा और कभी कभार डबल बारह घन्टों में एक मर्तबा खाना खाते. आंखों के कुफ़्ले मदीना[3] का भी ज़बरदस्त ज़ेह्न था, मोटर साइकिल इस लिये बेच दी कि चलाते हुए ग़ैर मह़रम के आड़े आ जाने की सूरत में नज़र की ह़िफ़ाज़त बे ह़द कठिन है. एक दफ़्आ़ किसी गाड़ी में उन के साथ सफ़र का मौक़अ़ मिला मैं ने उन्हें शीशों के बाहर नज़र डालते हुए नहीं देखा."

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के घर वालों का बयान है कि "येह बहुत कम गुफ़्तुगू फ़रमाते थे, अक्सर ख़ामोश ही रहते. बा'ज़ अवक़ात घर वालों से लिख कर भी बात चीत करते थे."

आप के अ़लाक़े गुलशने इक़्बाल (बाबुल मदीना) के एक इस्लामी भाई का तह़रीरी बयान है, "एक बार तै़ हुवा कि बा'दे फ़ज्र मर्हूम निगराने शूरा ह़ाजी मुशताक़ अ़त्तारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ार पर ह़ाज़िरी देने जाएंगे. चुनान्चे बा'दे नमाज़े फ़ज्र हम कार में बैठ कर जा रहे थे. ह़ाजी फ़ारूक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه कार में अगली निशस्त पर तशरीफ़ फ़रमा थे जबकि मैं पिछली सीट पर था. अचानक मेरी नज़र साइड ग्लास (sideGlass) पर पड़ी तो मैं ने देखा कि फ़ारूक़ भाई की

---

(2) भूक से कम खाने को दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में "पेट का कुफ़्ले मदीना" कहते हैं. मज़ीद तफ़्सील के लिये अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي की मायानाज़ तालीफ़ "पेट का कुफ़्ले मदीना" का मुता-लआ़ फ़रमाएं.

(3) बद निगाही के इ़लावा फ़ुज़ूल निगाही से बचने (और अक्सर नीची निगाहें रखने) को दा'वते इस्लामी में "आंखों का कुफ़्ले मदीना" कहते हैं.

निगाहें बिलकुल झुकी हुई थीं, हम उस वक़्त सुपर हाइवे से गुज़र रहे थे और दाएं बाएं बिलकुल सुनसान अ़लाक़ा था और बद निगाही का ख़दशा भी न था लेकिन आप की एह़तियात़ कि इस मर्ह़ले पर भी निगाहें झुकी हुई थीं."

उसी इस्लामी भाई का बयान है कि "मेरी शादी की तक़रीब में اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी शिर्कत फ़रमाई थी. जब सुब्ह़ फ़ज्र में मेरी उन से मुलाक़ात हुई तो मैं ने दिल में सोचा कि फ़ारूक़ भाई रात की तक़रीब के बारे में कोई रस्मी गुफ़्तुगू फ़रमाएंगे. लेकिन उन्हों ने कोई सुवाल न किया बल्कि नमाज़ के बा'द घर आते हुए भी मैं ने ही गुफ़्तुगू का सिल्सिला शुरूअ़ किया, यक़ीनन मुफ़्ती साह़िब का क़ुफ़्ले मदीना मिसाली था."

दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मज्लिसे शूरा के एक रुक्न का बयान है कि

"मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की हमराही में हिन्द के सफ़र का इत्तिफ़ाक़ हुवा. सफ़रे हिन्द के दौरान बारहा देखा कि अगर कभी गाड़ी में सुवार हो कर कहीं जाना पड़ता तो मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه गाड़ी में सुवार होते ही अपनी आंखें बन्द फ़रमा लिया करते थे. मन्ज़िल पर पहुंचने के बा'द जब कोई आप को तवज्जोह दिलाता कि हम मत़्लूबा मक़ाम पर पहुंच गए हैं तो आप आंखें खोला करते थे."

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. **اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

इत़ाअ़ते अमीर :

इत़ाअ़ते अमीर का भी बे ह़द जज़्बा था. एक मर्तबा राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र के दौरान जहां आप का क़ाफ़िला ठहरा हुवा था एक

इस्लामी भाई ने आप से निकाह़ पढ़ाने की दर-ख़्वास्त की तो आप ने उन से कहा कि अमीरे क़ाफ़िला से पूछ लीजिये अगर येह इजाज़त देंगे तो जाऊंगा वरना नहीं. (याद रहे कि अमीरे क़ाफ़िला वोह इस्लामी भाई थे जो आप के मा तह़्त मक्तब मज्लिसे इफ़्ता में ख़ादिम की है़सिय्यत से काम करते थे.)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. امین بِجاہِ النَّبِیِّ الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

म-दनी मर्कज़ की इत़ाअ़त :

गुलशने इक़्बाल बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि

"एक मर्तबा छुट्टियों में म-दनी क़ाफ़िले की तरकीब थी और तारीख़ भी तै़ थी कि अचानक हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में तरबिय्यती निशस्त का ए'लान हो गया. तो मैं परेशानी की ह़ालत में फ़ारूक़ भाई के पास आया मगर उन्हों ने फ़रमाया जैसा म-दनी मर्कज़ ने कह दिया हम वैसा ही करेंगे. अक्सर म-दनी मश्वरों व मुलाक़ातों में **DO AS DIRECTED** (या'नी जैसा हुक्म दिया जाए वैसा करना है) का ज़ेह्न देते और येह भी फ़रमाते कि म-दनी मर्कज़ की हर वोह बात जो शरीअ़त से न टकराती हो वोह अगर समझ न भी आए तो भी इत़ाअ़त करनी है."

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. امین بِجاہِ النَّبِیِّ الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْه पाबन्दी से दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत किया करते थे

और मुकम्मल तवज्जोह के साथ बयान वग़ैरा सुना करते थे. अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी जुमा'रात भी इज्तिमाअ़ में शिर्कत की और सारी रात फ़ैज़ाने मदीना ही में रहे. मज्लिसे इफ़्ता के एक मुफ़्ती साहिब مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِیْ का बयान है कि

''एक मर्तबा मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को किराए के मकान की तलाश के सिल्सिले में प्रोपर्टी डीलर के पास जाना था लेकिन इस से पहले एक इस्लामी भाई जिन का ऑपरेशन हुवा था, उन की इ़यादत में काफ़ी वक़्त लग गया. जब वहां से फ़ारिग़ हुए तो हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ का वक़्त हो चुका था, लिहाज़ा मुझे कहने लगे कि इज्तिमाअ़ में जाने का वक़्त हो चुका है लिहाज़ा इज्तिमाअ़ ही में चलते हैं, मकान बा'द में देखेंगे.''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी का सरमायए ह़यात था. जुमुअ़तुल मुबारक को अपनी वफ़ात से चन्द घन्टे क़ब्ल खाना खाने के बा'द येह बहुत अफ़्सुर्दा अन्दाज़ में नामूसे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सिल्सिले में ही गुफ़्तुगू कर रहे थे. उन को ह़ाल ही में (या'नी उन की वफ़ात से कुछ अ़र्सा क़ब्ल) ग़ैर मुस्लिमों की जानिब से नबिय्ये पाक साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में की गई गुस्ताख़ी का बहुत सदमा था.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ से महब्बत :

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अगर उन्हें कुछ इ़नायत फ़रमाते तो येह बे ह़द ख़ुश हो जाते और जा कर अपनी वालिदए मोह़तरमा के हाथ में दे देते और अ़र्ज़ करते : "इस तबर्रुक को घर में सब को थोड़ा थोड़ा तक़्सीम कर दीजिये."

जब कभी घर में मौजूदगी के दौरान शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का फ़ोन आता तो जैसे ही फ़ोन आता कुर्ता पहनने लगते.

अक्सर फ़रमाया करते कि : "मुझे जो इ़ज़्ज़त मिली मेरे मुर्शिद का सदक़ा है।" मक्तबे मज्लिसे इफ़्ता में इन की रफ़ाक़त में काम करने वाले मुफ़्ती साह़िब مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي का कहना है कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बहुत सी आ़दात इन में मौजूद थीं, म-सलन : मुस्कराने का अन्दाज़, गुफ़्तुगू का अन्दाज़ और इशारों से गुफ़्तुगू करने का अन्दाज़ वग़ैरा. मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को जब भी अपने मुर्शिदे करीम शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में ह़ाज़िरी का श-रफ़ नसीब होता तो आप बारगाहे मुर्शिद में ह़ाज़िरी के आदाब को ज़रूर मद्दे नज़र रखा करते, म-सलन दो ज़ानू हो कर बैठते, इस दौरान कोई वज़ीफ़ा न पढ़ते, बिला इजाज़ते मुर्शिद वहां से रुख़्सत न होते, वग़ैरहा. मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने मुर्शिदे कामिल مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي के दोनों शहज़ादों से भी बे ह़द महब्बत करते थे. ह़त्ता कि जब कभी किसी शहज़ादे को आता हुवा देखते तो एह़तिरामन खड़े हो जाया करते

ह़ालांकि आप बड़े शहज़ादे ह़ज़रत मौलाना अबू उसैद अलह़ाज अह़मद उ़बैद रज़ा अ़त्तारी म-दनी سلمه الغنی के उस्ताज़ भी थे.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

सब्र की आ़दत :

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं कि मैं ने कभी भी इन के मुंह से येह नहीं सुना कि मेरे जिस्म में दर्द हो रहा है, या मुझे बुख़ार है, या मेरा सर भारी हो रहा है.

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ के घर वालों का तह़रीरी बयान है कि ह़ाजी फ़ारूक भाई की त़बीअ़त में बहुत सब्र था. उन की इतनी प्यारी आ़दत थी कि येह यूं नहीं बताते थे कि आज मेरे सर में दर्द है या मुझे बुख़ार है, अक्सर उन के चेहरे की थकावट देख कर हम पूछते थे तो मा'लूम होता था कि इन को फ़ुलां तक्लीफ़ है.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

हर काम में नर्मी :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ की वालिदए मोह़तरमा का बयान है कि हम ने इन को कभी ग़ुस्सा करते नहीं देखा, न बहन, भाइयों पर, न अपनी बच्ची की अम्मी पर ग़ुस्सा करते, हमेशा नर्मी से गुफ़्तुगू फ़रमाते थे.

मक्तबे मज्लिसे इफ़्ता में इन की रफ़ाक़त में सुन्नतों की ख़िदमत करने वाले एक मुफ़्ती साह़िब مَدَّ ظِلُّہُ الْعَالِی का बयान है कि

''मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ अपने साथ काम

करने वालों पर कमाले शफ़्क़त फ़रमाते और हर दम ख़ैर ख़्वाही पेशे नज़र होती, तकल्लुफ़ नाम की कोई चीज़ न थी. मुझ से कभी येह नहीं फ़रमाया ''येह काम क्यूं नहीं किया'' और मुझे कभी भी नहीं डांटा और न ही किसी को डांटते देखा.''

मज्लिसे इफ़्ता ही के एक मुफ़्ती साहिब مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِی का बयान है कि

''जब मैं तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह साले दुवुम में था मुझे मुफ़्ती साहिब के मा तहूत ''दारुल इफ़्ता नूरुल इरफ़ान'' में 18 अगस्त 2003 ई. से 19 जून 2004 ई. तक फ़तवा नवेसी की सआ़दत ह़ासिल हुई. मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत मुश्फ़िक़ थे जब भी फ़तवा उन की ख़िदमत में पेश करता तो वोह मेरी तरबिय्यत के लिये उस पर इश्कालात वारिद कर के उन के जवाबात त़लब करते. फिर मैं उन के जवाबात दे देता तो बे ह़द ख़ुश होते और अगर नाकाम रहता तो नर्मी के साथ ख़ुद जवाब इर्शाद फ़रमा देते और फ़तवा में तब्दीली करना होती तो भी राह नुमाई फ़रमा देते.''

मक्तबे मज्लिसे इफ़्ता व तह़क़ीक़ाते शरइ़य्या में ख़िदमत पर मामूर इस्लामी भाई का बयान है कि एक मर्तबा मक्तब में कम्प्यूटर की मेज़ें रखने का मुआ़-मला दरपेश था. मुझ से पैमाइश में भूल हो गई और नती-जतन लाई जाने वाली मेज़ें वहां पूरी न आ रही थीं. कोई और होता तो शायद मेरी ख़ूब ख़बर लेता मगर मुफ़्ती साहिब के क़ुरबान ! आप ने मुझे इस बारे में ज़रा भी नहीं डांटा बल्कि निहायत नर्मी के साथ मुझे मेरी ग़-लती की त़रफ़ मु-तवज्जेह किया.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. **اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

खाने में ऐ़ब न निकालना :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के घर वालों का कुछ इस त़रह़ बयान है कि इन को जो खाना पेश किया जाता येह शिक्वा किये बिग़ैर खा लेते. कई बार ऐसा हुवा कि इन को खाना पेश किया गया और उस में नमक न था तो भी येह एक लफ़्ज़ न बोले और यूंही खाना तनावुल फ़रमा लिया.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. **اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

किफ़ायत शिआ़री :

अपनी अलमारी में सिर्फ़ चार जोड़े रखते, माहे रबीउ़न्नूर में नए कपड़े सिलवाते तो पुराने किसी को दे देते. इन्तिक़ाल से कुछ अ़र्सा क़ब्ल जब पंजाब तशरीफ़ ले गए तो अपने तमाम जोड़े साथ ले गए और तक़्सीम कर दिये थे.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. **اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

सादगी :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की वालिदए मोह़तरमा का बयान है कि उन्हों ने ह़ाजी फ़ारूक़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से दर्याफ़्त फ़रमाया कि घर में आप के रहने का जो ह़िस्सा है वहां रंगो रोग़न करवा दूं ? तो अ़र्ज़ की "नहीं ! मुझे सिर्फ़ वुज़ूख़ाना बनवा दीजिये."

अपनी शादी के मौक़अ़ पर येह मुसिर थे कि इन की ज़ौजा को शादी में जहेज़ न दिया जाए मगर लड़की के घर वालों ने जहेज़ दिया. आप ने मजबूरन ले तो लिया मगर उन्हें जहेज़ से भरे हुए घर में लुत़्फ़ न आता था और बार बार अपनी बच्ची की अम्मी से येह इसरार

करते कि इस को बेच दें, हमारा घर बिलकुल सादा होना चाहिये.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. **اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

सवाबे जारिय्या के मु-तमन्नी :

एक बार इन की हमशीरा किताबों की अलमारी साफ़ कर रही थीं तो उन्हें एक पर्ची मिली जिस पर लिखा था "मेरे मरने के बा'द तमाम किताबें दा'वते इस्लामी के "जामिअ़तुल मदीना" को दे दी जाएं." फिर कुछ अ़र्से के बा'द ख़ुद ही येह किताबें ले गए और दारुल इफ़्ता में रखवा दीं.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. **اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

सवाबे आख़िरत के ह़रीस :

एक मर्तबा अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِيْ तह़रीरी काम के सिल्सिले में बैरूने मुल्क थे. इस दौरान मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ाजी मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को भी आप की बारगाह में ह़ाज़िरी का श-रफ़ ह़ासिल हुवा. जब अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِيْ ने नमाज़े मग़्रिब के बा'द नवाफ़िल (या'नी नमाज़े अव्वाबीन) में सूरए यासीन मुकम्मल तिलावत की तो मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस की ह़िक्मत दर्याफ़्त की तो अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِيْ ने फ़रमाया कि तिलावते क़ुर्आन का सवाब नमाज़ में ज़ियादा है, येह सुन कर मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहने लगे कि اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अब मैं भी ह़िफ़्ज़े क़ुर्आन की दोहराई नमाज़े नफ़्ल में किया करूंगा.

तिलावते कुर्आन का ज़ौक़ :

मक्तबे मज्लिसे इफ़्ता में ख़िदमत पर मामूर इस्लामी भाई का कहना है कि मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अक्सर व बेशतर अपना वक़्ते इजारा ख़त्म हो जाने के बा'द मक्तब में बैठ कर तिलावते कुर्आन किया करते थे.

गुलशने इक़्बाल बाबुल मदीना (कराची) के इस्लामी भाई का बयान है कि "मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अक्सर कुर्आने मजीद की तिलावत करते रहते थे. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान मअ़ तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान का कई मर्तबा मुकम्मल मुता-लआ़ कर चुके थे. म-दनी क़ाफ़िला में सफ़र के दौरान भी जब कभी खाना पकाने की ज़िम्मादारी मिलती तो खाना पकाने के दौरान तिलावते कुर्आन करते रहते. اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इतने ज़हीन थे कि उन के सामने अगर कोई उर्दू तर्जमा सुना कर आयत पूछता तो बता दिया करते थे.

एक दिन आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ मेरे साथ मोटर साइकिल पर सुवार थे. मैं मोटर साइकिल चला रहा था और आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ तिलावत कर रहे थे. रास्ते में मुझे यूं लगा कि कोई तार हमारी मोटर साइकिल से टकराया है. बहर हाल जब मैं आप को घर छोड़ कर उसी रास्ते से वापस आया तो लोगों का सड़क पर हुजूम था. पूछने पर मा'लूम हुवा बिजली का तार सड़क पर गिरा हुवा है, जिस में करन्ट है. येह सुन कर मुझे ज़ेह्नी तौ़र पर धचका लगा कि येही तार तो हमारी मोटर साइकिल से टकराया था लेकिन हमें करन्ट नहीं लगा. मेरा हुस्ने ज़न है येह तिलावते कुर्आन की ब-र-कत थी."

पर्दे की एह़तियातें :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने अपने घर में येह

तरकीब बना रखी थी कि जिस वक़्त कमरे में मुफ़्ती साहिब होते तो उस वक़्त कोई भाभी उस कमरे में न आ सकती थीं. और जहां उन की बच्ची की अम्मी होतीं वहां घर का कोई ना महरम मर्द न आ सकता था. इस त़रह़ बहुत एह़तियात़ के साथ मुकम्मल पर्दा रहता था. मुफ़्ती साहिब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपनी सास के सामने भी न आते थे बल्कि उन से भी पर्दा करते थे.

आप के इन्तिक़ाल से कुछ अ़र्सा पहले की बात है कि आप के घर में कुछ ता'मीराती काम होना था और मज़दूरों वग़ैरा की आमद पर बे पर्दगी का एह़तिमाल था. चुनान्चे आप बे पर्दगी से बचने के लिये अपनी बच्ची की अम्मी के साथ आ़रिज़ी त़ौर पर किराए के घर में मुन्तक़िल हो गए. इसी त़रह़ जब कभी अपनी बच्ची की अम्मी के इ़लाज की ज़रूरत पेश आती तो इस बात का इल्तिज़ाम किया करते कि इन का चेक अप वग़ैरा लेडी डॉक्टर ही करे.

अपनी बच्ची और उस की अम्मी की तरबिय्यत :

उन की म-दनी मुन्नी (उन के इन्तिक़ाल के वक़्त) 11 माह की थी, उस से बहुत महब्बत फ़रमाया करते और उस के बारे में अक्सर फ़रमाया क रते कि اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस को मैं ख़ुद पढ़ाऊंगा. इन की म-दनी मुन्नी से घर का कोई फ़र्द अगर कहता कि बोलो बेटा ''पापा'' तो फ़रमाते कि इस को यूं न सिखाओ बल्कि इस के सामने ''अल्लाह, अल्लाह'' कहते रहें. बच्ची की अम्मी को ताकीद फ़रमाते कि घर का काम छोड़ कर पहले नमाज़ अदा करें, अगर वोह इ़शा में ताख़ीर कर देतीं तो नाराज़ होते कि पहले नमाज़ अदा करें.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

शौक़े मुत़ा-लआ़ :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अक्सर मुत़ा-लए़ में मशग़ूल रहा करते और अपनी वफ़ात से क़ब्ल भी दो पहर का खाना खाने के बा'द किसी किताब का मुत़ा-लआ़ कर रहे थे. आप ने फ़तावा र-ज़विय्यह शरीफ़ और बहारे शरीअ़त का बिल इस्तीआ़ब (या'नी मुकम्मल) मुत़ा-लआ़ करने के साथ साथ फ़तावा र-ज़विय्यह से ह़ासिल होने वाले म-दनी फूल भी जम्अ़ कर रखे थे. नीज़ ज़ेवरे त़बाअ़त से आरास्ता होने वाले मुख़्तलिफ़ उर्दू फ़तावा का भी मुकम्मल मुत़ा-लआ़ कर चुके थे.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

यादे मौत :

मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी म-दनी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی ने अपनी शादी के चन्द दिनों बा'द ही अपनी मन्कूह़ा से फ़रमा दिया था कि मैं ज़ियादा अ़र्सा ज़िन्दा नहीं रह सकूंगा. आप अक्सर घर वालों से फ़रमाते कि मेरी उ़म्र बहुत कम है मैं ज़ियादा अ़र्सा ज़िन्दा नहीं रहूंगा. जब कभी उन की नानी उन से फ़रमातीं कि बेटा मेरा जनाज़ा तुम पढ़ाना, तो आप जवाब देते कि नानी ! मेरी उ़म्र बहुत कम है. आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के घर वालों का बयान है कि अपनी मन्कूह़ा को शादी के कुछ अ़र्से बा'द ही ताकीद कर दी थी कि मेरा छोड़ा हुवा माल शरीअ़त के मुत़ाबिक़ तक़्सीम करना.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

क़नाअ़त पसन्दी :

जामिअ़तुल मदीना हो या दारुल इफ़्ता,मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने कभी तन-ख़्वाह बढ़ाने का मुत़ा-लबा नहीं किया. मर्कज़ी मज्लिसे शूरा के निगरान مَدَّ ظِلُّہُ العَالِی का बयान है कि

''ह़ाल ही में (या'नी इन की वफ़ात से कुछ अ़र्सा क़ब्ल) इन का मुशा-हरा बढ़ा था तो येह मेरे घर ख़ुद तशरीफ़ लाए. इन्तिहाई परेशानी के आ़लम में थे. मुझ से फ़रमाने लगे कि ''मेरी तन-ख़्वाह काफ़ी बढ़ गई है, मुझे इस ज़ाइद रक़म की ह़ाजत नहीं है लिहाज़ा मुझ पर करम किया जाए और मेरा मुशा-हरा न बढ़ाया जाए.''

ह़क़ीक़त येही है कि तसव्वुफ़ ''क़ाल'' का नहीं ''ह़ाल'' का नाम है, और येह ह़क़ीक़ी सूफ़ी, मुत्तक़ी बुज़ुर्ग थे.'' (इन्तिहा)

अपने इन्तिक़ाल से कुछ अ़र्सा क़ब्ल मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने अपनी स्कूटर और लेपटॉप (leptop) कम्प्यूटर वग़ैरा सब बेच दिया था और फ़रमाया कि अब मुझे इस की ज़रूरत नहीं है. इसी त़रह़ एक मर्तबा जब आप किराए पर मकान लेना चाह रहे थे तो किसी ने मश्वरा दिया कि आप मकान ख़रीद क्यूं नहीं लेते ? तो फ़रमाया कि मुख़्तसर ज़िन्दगी है, किराए का मकान ही काफ़ी है.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

घर वालों की आप से मह़ब्बत :

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से आप के घर वालों की मह़ब्बत का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि घर वाले इन से दम करवाते, इन का बचा हुवा पानी संभाल कर रखते और बत़ौरे तबर्रुक इस्ति'माल किया करते. उन की प्लेट से खाने के लिये बच्चे आपस में

ज़िद करते थे. उन की जूठी चाय को वापस पतीले में डाल कर सब को पेश करते थे. येह इन के म-दनी किरदार की मज़बूत दलील है गोया कि अमीरे अहले सुन्नत مدظلہ العالی के अ़ता कर्दा घर में म-दनी माह़ोल बनाने के 15 म-दनी फूलों पर इन का मज़बूती से अ़मल था, वोह म-दनी फूल येह हैं :

"घर में म-दनी माह़ोल" के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से 15 म-दनी फूल

1. घर में आते जाते बुलन्द आवाज़ से सलाम करें.

2. वालिद या वालिदा को आते देख कर ता'ज़ीमन खड़े हो जाएं.

3. दिन में कम अज़ कम एक बार इस्लामी भाई वालिद साहि़ब और इस्लामी बहनें मां का हाथ और पाउं चूमा करें.

4. वालिदैन के सामने आवाज़ धीमी रखें, इन से आंख हरगिज़ न मिलाएं.

5. इन का सोंपा हर वोह काम जो ख़िलाफ़े शर-अ़ न हो फ़ौरन कर डालें.

6. मां बल्कि घर (और बाहर) के एक दिन के बच्चे को भी आप कह कर ही मुख़ातिब हों.

7. अपने मह़ल्ले की मस्जिद की इ़शा की जमाअ़त के वक़्त से ले कर दो घन्टे के अन्दर सो जाया करें काश ! तहज्जुद में आंख खुल जाए वरना कम अज़ कम नमाज़े फ़ज्र तो ब आसानी (मस्जिद की पहली सफ़ में बा जमाअ़त) मुयस्सर आए और फिर काम काज में सुस्ती न हो.

8. घर में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों का सिल्सिला हो तो बार बार न टोकें, सब को नर्मी के साथ

सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें सुनाएं. اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ ''म-दनी'' नताइज बर आमद होंगे.

9. घर में कितनी ही डांट बल्कि मार भी पड़े, सब्र सब्र और सब्र कीजिये. अगर आप ज़बान चलाएंगे तो ''म-दनी माहोल'' बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मज़ीद बिगाड़ पैदा हो सकता है. लिहाज़ा गुस्सा, चिड़चिड़ा पन और झाड़ने वग़ैरा की आदत बिल्कुल ख़त्म कर दें.

10. घर में रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स ज़रूर ज़रूर ज़रूर दें या सुनें.

11. अपने घर वालों की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये दिल सोज़ी के साथ दुआ भी करते रहें कि दुआ मोमिन का हथियार है.

12. सुसराल में रहने वालियां जहां घर का ज़िक्र है वहां सुसराल और जहां वालिदैन का ज़िक्र है वहां सास और सुसर के साथ वोही सुलूक बजा लाएं जबकि कोई मानेए शर-ई न हो.

13. मसाइलुल क़ुर्आन स. 290 पर है, हर नमाज़ के बा'द ज़ैल में दी हुई दुआ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लें اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में म-दनी माहोल क़ाइम होगा.

(اَللّٰهُمَّ) رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ۝

(पारह. 19, अल फ़ुरक़ान 74)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़गारों का पेशवा बना.

14. ना फ़रमान बच्चा या बड़ा जब सोया हो तो उस के सिरहाने खड़े

हो कर ज़ैल में दी हुई आयात सिर्फ़ एक बार इतनी आवाज़ से पढ़ें कि उस की आंख न खुले. (मुद्दत 11 ता 21 दिन)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط بَلۡ ھُوَ قُرۡاٰنٌ مَّجِیۡدٌ ۙ فِیۡ لَوۡحٍ مَّحۡفُوۡظٍ

(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान: बल्कि वोह कमाले शरफ़ वाला क़ुर्आन है लौहे महफ़ूज़ में) (पारह : 30, अल बुरूज, 21,22) (अव्वल आख़िर एक मर्तबा दुरूद शरीफ़)

15. नीज़ ना फ़रमान औलाद फ़रमां बरदार बनाने के लिये ता हुसूले मुराद नमाज़े फ़ज्र के बा'द आस्मान की त़रफ़ रुख कर के **''یَا شَھِیۡدُ''** 21 बार पढ़ें (अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़).

म-दनी इल्तिजा : ना फ़रमानों को फ़रमां बरदार बनाने के लिये अवराद शुरूअ़ करने से क़ब्ल सय्यिदुना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن के ईसाले सवाब के लिये 25 रुपै की दीनी किताबें तक़्सीम कर दें.

वक़्त की पाबन्दी :

तदरीस का मुआ़-मला हो या दारुल इफ़्ता का, मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ हमेशा वक़्त की पाबन्दी फ़रमाते रहे और कभी बिला ज़रूरत छुट्टी नहीं करते थे बल्कि जामिअ़तुल मदीना कन्ज़ुल ईमान में तो कमोबेश दो साला तदरीसी दौर में इन की एक भी छुट्टी नहीं हुई. नमाज़े फ़ज्र के बा'द वक़्त कम होने की वजह से नाश्ता भी फ़ज्र से पहले कर लिया करते थे ताकि ताख़ीर न हो.

दा'वते इस्लामी की मज्लिस, **अल मदीनतुल इल्मिय्या** और तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह के एक इस्लामी भाई का बयान है कि

''मैं ने क़िब्ला मुफ़्ती साहिब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को हमेशा वक़्त का पाबन्द पाया है, मज्लिसे इफ़्ता के मक्तब में उन का वक़्त सुब्ह़

8:00 बजे शुरूअ़ होता था लेकिन येह जब भी बाबुल मदीना (कराची) में होते तो हमेशा वक़्त से पहले तशरीफ़ ले आते और मज्लिसे इफ़्ता का मक्तब ख़ुद ही खोलते थे (ह़ालांकि येह उन की ज़िम्मादारी न थी). इस बात के गवाह पहली मन्ज़िल के ख़ादिम और दीगर इस्लामी भाई भी हैं. मुझे इस बात का मुशा-हदा काफ़ी महीनों से है इस लिये कि मुझे रोज़ाना सुब्ह़ कमोबेश 7:50 पर कहीं जाना होता था और तक़रीबन रोज़ाना ज़ियारत का श-रफ़ हासिल होता इसी (या'नी उन की ज़िन्दगी की आख़िरी) जुमा'रात की बात है कि मैं ह़स्बे मा'मूल 7:50 पर जब बाहर निकला तो सोच ही रहा था कि आज मुफ़्ती साह़िब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ज़ियारत नहीं हो रही, शायद पहले तशरीफ़ ला चुके होंगे या हो सकता है ताख़ीर हो गई हो, इसी दौरान मैं ने अपने पास से गुज़रने वाले रिक्शे में मुफ़्ती साह़िब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ज़ियारत का श-रफ़ ह़ासिल किया. मैं ने सोचा कि मुफ़्ती साह़िब ने शायद महसूस किया होगा कि कहीं पहुंचने में ताख़ीर न हो जाए इस लिये रिक्शा में तशरीफ़ लाए क्यूंकि आप अक्सर पैदल तशरीफ़ लाते. मुफ़्ती साह़िब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को देख कर बड़ी ख़ुशी हुई क्यूंकि आप की पाबन्दी से मैं ने अन्दाज़ा लगाया कि ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का तक़्वा इन्हें रुख़्सत पर अ़मल की इजाज़त नहीं देता हमारी ''मज्लिस'' में जिन इस्लामी भाइयों का इज़ारा 8:00 बजे का होता है, उन को 9:00 बजे तक रुख़्सत होती है, अगर वोह अपना वक़्त आख़िर में दे दें उन का येह वक़्त ताख़ीर में शुमार नहीं होता. नीज़ मुफ़्ती साह़िब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की पाबन्दी को देख कर मेरा येह ज़ेह्न बना कि येह वक़्त से पहले इस लिये तशरीफ़ लाते हैं ताकि वक़्त से पहले मक्तब खुल जाए और इस्लामी भाइयों का कुछ वक़्त भी फ़ारिग़ न गुज़रे. इस के इलावा दीगर तन्ज़ीमी मा'लूमात

में भी वक़्त की पाबन्दी मिसाली थी.''

तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह (मुफ़्ती कोर्स) साले अव्वल के एक इस्लामी भाई का बयान है कि

''येह बात मेरे मुशा-हदे में भी रही कि मुफ़्ती साहिब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ उसूल व वक़्त के बहुत ज़ियादा पाबन्द थे, और दूसरे के वक़्त की भी क़द्र करते कि तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह के द-रजे में पूरे 8:00 बजे पढ़ाई शुरूअ़ फ़रमाते अगर्चे द-रजे में एक या दो इस्लामी भाई हों. नीज़ उन का इजारा 4:00 तक था मगर आप अक्सर अ़स्र बल्कि मग़्रिब के बा'द भी मौजूद रहते. हाज़िरी रजिस्टर भी इस बात का गवाह है कि पूरे महीने में शायद दो चार दिन अपने इजारे के मुक़र्ररह वक़्त पर (या'नी 4:00 बजे) तशरीफ़ ले गए हों.''

मुफ़्ती साहिब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ जब बाबुल मदीना (कराची) के दारुल इफ़्ता क़ुत्बे मदीना ख़ज़रा मस्जिद ड्रग कॉलोनी के दौरे पर थे. तो वहां के मुफ़्ती साहिब مَدَّ ظِلُّہُ العَالِی ने आप से इस्तिफ़्सार किया कि किस बात ने आप को वक़्त का इस क़दर पाबन्द बना दिया है ? तो मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने मुख़्तसर और जामेअ़ जवाब इर्शाद फ़रमाया ''एह़सासे ज़िम्मादारी ने (मुझे वक़्त का पाबन्द बना दिया).''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

अन्दाज़े तदरीस :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज मुह़म्मद फ़ारूक़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ बहुत सह़ल अन्दाज़ में त़-लबा की नफ़्सिय्यात के मुत़ाबिक़ सबक़ पढ़ाते और सुवालात पूछने वालों की मुकम्मल तशफ़्फ़ी

फ़रमाते. तफ़्सीरे जलालैन पढ़ाने का ख़ास तजरिबा रखते थे. तक़रीबन चार माह शरीअ़त कॉर्स भी पढ़ाया जिस में दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मज्लिसे शूरा के निगरान, बा'ज़ अराकीने शूरा, पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना के अराकीन और कई मजालिस के ज़िम्मादारान और मुख़्तलिफ़ शो'बाहाए ज़िन्दगी से तअ़ल्लुक़ रखने वाले इस्लामी भाई म-सलन टीचर, ताजिर, मुलाज़िमत पेशा, स्कूल व कॉलेज के त़-लबा वग़ैरा शिर्कत करते. इब्तिदाअन ''निसाबे शरीअ़त'' से अ़क़ाइद के बारे में दर्स होता, फिर शु-रकाअ इस दर्स के मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते और मुफ़्ती साहिब इन्तिहाई आसान व आ़म फ़हम अन्दाज़ में जवाबात मर्हमत फ़रमाते, फिर इ़बादात या मुआ़-मलात से मु-तअ़ल्लिक़ दर्स होता, फिर इस से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात व जवाबात का सिल्सिला होता फिर तजवीद व क़िराअत के उसूलों के मुत़ाबिक़ मुफ़्ती साहिब कुर्आने मजीद पढ़ाया करते थे. (ता दमे तह़रीर इस दर्स की पांच केसिटें मन्ज़रे आ़म पर आ चुकी हैं जिन्हें मक-त-बतुल मदीना से ह़ासिल किया जा सकता है.) इसी वजह से अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِی आप को ''उस्ताज़ुश्शूरा'' फ़रमाया करते थे.

शहीद मस्जिद में इमामत :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक अ़र्से तक शहीद मस्जिद खारादर बाबुल मदीना (कराची) में इमामत फ़रमाते रहे, आप के विसाल के बा'द वहां की इन्तिज़ामिया की जानिब से एक मक्तूब मौसूल हुवा जिस में येह तह़रीर थी,

''मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه शहीद मस्जिद के साबिक़ पेश इमाम भी थे, उन से اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमें कोई शिकायत नहीं थी

बल्कि उन का कमेटी वालों पर येह एह़सान है कि उन्हों ने कई बार माहवार वज़ीफ़ा नहीं लिया और कहते थे कि मस्रूफ़िय्यत की वजह से मैं अक्सर नमाज़ पढ़ाने से क़ासिर रहता हूं. येह उन के तक़्वा की बेह्तरीन मिसाल है, (दा'वते इस्लामी की ज़िम्मादारियां बढ़ने की वजह से) शहीद मस्जिद की इमामत छोड़ने से पहले उन्हों ने कमोबेश पांच, माह बिग़ैर वज़ीफ़ा के इमामत की."

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

नमाज़ों का एह्तिमाम :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बा जमाअ़त नमाज़ों का बहुत ज़ियादा एह्तिमाम फ़रमाते. कई बार ट्रेन से अगर पंजाब जाना होता तो बाबुल मदीना कराची से ह़ैदरआबाद तक बस में सफ़र फ़रमाते ताकि नमाज़ ब आसानी अदा हो सके. अगर ट्रेन आने में ताख़ीर होती तो बा क़ाइदा मस्जिद में जा कर नमाज़े बा जमाअ़त अदा करने की कोशिश फ़रमाते. हमेशा हर नमाज़ पहली सफ़ में अदा करने की मुकम्मल कोशिश फ़रमाते.

उन के एक रफ़ीक़ मुफ़्ती साह़िब مَدَّ ظِلُّہُ الْعَالِی का बयान है कि

"मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बहुत बा अ़मल थे, म-दनी इन्आ़मात के आ़मिल थे. अक्सर बा वुज़ू रहा करते थे मैं ने मु-तअ़द्दद बार इन्हें वुज़ू के बा'द नवाफ़िल (या'नी तह़िय्यतुल वुज़ू) अदा करते देखा. उ़मूमन अज़ान से क़ब्ल वुज़ू कर लेते और जैसे ही अज़ान होती मस्जिद में चले जाते और उ़मूमन पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ते मैं इन के साथ तक़्रीबन चार साल रहा मगर मैं ने इन की तक्बीरे ऊला फ़ौत होते नहीं देखी."

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ वुज़ू से पहले सवाब की निय्यत से इमामे का एक एक पेच खोला करते, और ग़ालिबन इस ह़दीस को पेशे नज़र रखते हुए क़िब्ला रुख़ हो कर इमामा बांधा करते कि ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरवरे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इमामे अ़रब के ताज हैं तो इमामा बांधो तुम्हारा ह़िल्म बढ़ेगा और जो इमामा बांधे उस के लिये हर पेच पर एक नेकी है, और जब उतारे तो हर पेच खोलने पर एक ख़त़ा मुआ़फ़ होती है. (कन्ज़ुल उ़म्माल, किताबुल मई-शतह वल आ़दात, अल ह़दीस : 41138, जि. 15, स. 133, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत)

फिर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का मुरत्तब कर्दा मस्जिद में जाने की चालीस निय्यतों का कार्ड पढ़ा करते (येह कार्ड मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल किया जा सकता है) और मस्जिद में दाख़िल होने के बा'द कोशिश करते कि हर सफ़ पर सीधा क़दम रखें. फ़र्ज़ नमाज़ अदा करने के बा'द सुन्नतें अदा करने से पहले गुफ़्तुगू से ह़त्तल इम्कान गुरेज़ फ़रमाते.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

आप के अ़लाक़े गुलशने इक़्बाल बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि हमारे अ़लाक़े में एक जगह ख़रीदी गई थी और वहां जाए नमाज़ क़ाइम की गई थी. मुफ़्ती फ़ारूक़ رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ वहां बसा अवक़ात नमाज़ अदा करने आया करते थे (इन्तिक़ाल वाले दिन भी जुमुआ़ की नमाज़ मुफ़्ती फ़ारूक़ رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ ने वहीं अदा फ़रमाई थी) उस जगह पर क़िब्ला की सम्त के बारे में मुफ़्ती फ़ारूक़ رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ को कुछ शक गुज़रा, उन्हों ने मुझे फ़ोन

किया कि फुलां दिन मुझे फ़ोन कीजियेगा क़िब्ला की सम्त चेक करने की तरकीब बनाएंगे. ग़ालिबन मैं फ़ोन न कर सका बल्कि उन्हों ने मुझे दोबारा फ़ोन किया और कस्रते मस्रूफ़ियात के बा वुजूद बा'दे इशा ख़ुद तशरीफ़ ले आए. आप सम्ते क़िब्ला चेक करने का आला भी अपने साथ लाए थे. वहीं उन्हों ने बैठ कर कागज़ पर बा क़ाइदा नक़्शा बनाया कि यहां पर सफ़ों का रुख़ 45 डिग्री ज़ाविये में है या नहीं ? ग़ौरो तफ़क्कुर के बा'द ज़ाहिर हुवा कि वहां की सफ़ूफ़ क़िब्ला की सम्त से हटी हुई थीं लेकिन اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ 45 डिग्री के अन्दर अन्दर थीं लिहाज़ा नमाज़ें दुरुस्त ही हो रही थीं. येह उन की बसीरत ही थी उन्हों ने अन्दाज़ा कर लिया कि क़िब्ला की सम्त में कुछ न कुछ ग़-लती है और फिर अपनी मस्रूफ़ियात में से वक़्त निकाल कर आना यक़ीनन हम इस्लामी भाइयों के साथ बड़ी ख़ैर ख़्वाही थी.

एक मर्तबा मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْغَنِی गौसिया मस्जिद (आ़बिद टाउन, गुलशने इक़्बाल) में मो'तकिफ़ थे. इसी दौरान एक मो'तकिफ़ अपने भाई के बारे में बहुत मशहूर कर चुके थे कि इन के भाई पर "सुवारी" आती है. एक दिन उन के वोही भाई भी आ गए और सुवारी भी तशरीफ़ ले आई, इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त वोह सुवारी वाले साहिब और उन के भाई, फ़ारूक़ भाई के ख़ैमे में थे. जब सुवारी आई तो सब सहम गए और सुवारी वाले साहिब से सुवालात करने लगे. फ़ारूक़ भाई बड़े पुर ए'तिमाद अन्दाज़ में अपने काम में मशगूल रहे. उस वक़्त तो कुछ न कहा मगर रात की निशस्त में शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّہُ الْعَالِی का रिसाला "जिन्नात की हिकायात" पढ़ कर सुना दिया. जिस में सुवारियों के ढकोसलों का रद्दे बलीग़ किया गया है.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

आ़जिज़ी :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ज़ियारत से फ़ैज़याब होने वाले इस्लामी भाई इस बात के गवाह हैं कि मुफ़्ती साहिब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ आ़जिज़ी व इन्किसारी के पैकर थे. बिल ख़ुसूस आप ख़ादिमीन इस्लामी भाइयों से बड़ी महब्बत से पेश आया करते थे ख़ादिम को गोया बड़ा भाई समझते और उस की आ़म आदमी से ज़ियादा क़द्र किया करते. मर्कज़ी मज्लिसे शूरा के रुक्न होने के बा वुजूद कभी बड़ी रातों वग़ैरा के इज्तिमाआ़त में भी मन्च पर तशरीफ़ न लाते थे.

गुलशने इक़्बाल बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि मुफ़्ती साहिब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इतने सादा त़बीअ़त थे कि मुझे ऐसा ही लगता था कि मैं एक आ़म इस्लामी भाई के साथ हूं, चाहे अ़लाक़े में हों या म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र पर हों हर जगह सादगी और आ़जिज़ी, आप की सादगी देख कर कोई येह महसूस नहीं कर सकता था कि येह इतने बड़े मुफ़्ती साहिब हैं رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ .

गुलशने इक़्बाल के ही एक इस्लामी भाई का बयान है कि

मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ जुमा'रात को बा'दे इज्तिमाअ़ सुन्नतें सीखने सिखाने के ह़ल्क़े में भी शिर्कत फ़रमाया करते थे. कई मर्तबा ऐसा हुवा कि मैं ने कई नए इस्लामी भाइयों को अ़लाक़े में आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का तआ़रुफ़ आ़लिम व मुफ़्ती के लिहाज़ से कराया तो आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ आ़जिज़ी करते हुए फ़रमाते कि मैं मुफ़्ती नहीं हूं. एक मर्तबा बड़े प्यार से समझाया कि "आप जब मेरा तआ़रुफ़ इस त़रह़ से करा देते हैं तो तरकीब आउट हो जाती है और फिर मैं इतना फ़्री हो कर म-दनी क़ाफ़िले व दीगर म-दनी कामों की

दा'वत नहीं दे पाता." سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मुफ़्ती कहलाने से बचने का कितना प्यारा अन्दाज़ है.

जब बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ में पहली बार बत़ौरे रुक्ने शूरा मुफ़्ती फ़ारूक़ साहिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के नाम का ए'लान हुवा तो उस वक़्त आप अ़लाक़ाई निगरान थे. जब सब ने मुबारक बाद देना शुरूअ़ की तो फ़रमाया कि "मुफ़्ती फ़ारूक़ का ए'लान हुवा है वोह कोई और होंगे (क्यूंकि मैं तो मुफ़्ती नहीं हूं)."

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَيْهِ الرَّحْمَة बत़ौरे अ़लाक़ाई निगरान :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बत़ौरे अ़लाक़ाई निगरान अपने मा तह़्त इस्लामी भाइयों का ख़याल रखते. दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत में आप एक साल नाज़िमे मक्तब रहे, आप की निज़ामत मिसाली थी, नाज़िम होने की ह़ैसिय्यत से तन्क़ीद न करते बल्कि इज्तिमाई त़ौर पर समझाते. कभी किसी की शिकायत न करते बल्कि पर्दा पोशी फ़रमाते. बा रो'ब होने के बा वुजूद अपनाइयत बहुत थी. इजारे पर काम करने वाले इस्लामी भाइयों की ख़ैर ख़्वाही करते हुए उन की तन-ख़्वाह की अदाएगी की जल्द से जल्द तरकीब बनाने की कोशिश करते.

उन की रफ़ाक़त में सुन्नतों की ख़िदमत करने वाले एक मुफ़्ती साहिब مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِيْ का कहना है कि "अगर्चे आप मुझ से तकल्लुफ़ नहीं करते थे लेकिन क़ुदरती त़ौर पर बा रो'ब थे, मुझे उन से बहुत मह़ब्बत थी लेकिन उन के रो'ब की वजह से मैं कभी इतना भी न कह

सका कि मुझे आप से महब्बत है.''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی की रेह़लत :

18 मुह़र्रमुल ह़राम 1427 हि. ब मुत़ाबिक़ 17 फ़रवरी 2006 ई. जुमुआ़ को बा'द नमाज़े मग़्रिब तक़रीबन 8:00 बजे बाबुल मदीना कराची में येह ख़बर जंगल की आग की त़रह़ फैल गई कि तब्लीगे़ कुर्आनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मज्लिसे शूरा के रुक्न मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अलह़ाज़ ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी इन्तिक़ाल फ़रमा गए हैं. اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ

वफ़ात की कैफ़िय्यात :

येह ख़बर मिलने की देर थी कि कसीर इस्लामी भाई आप के घर (वाक़ेअ़ गुलशने इक़्बाल बाबुल मदीना कराची) के बाहर जम्अ़ हो गए. हर इस्लामी भाई तस्वीरे ग़म बना अपनी आंखों में अश्कों के मोती लिये नज़र आ रहा था. कसीर इस्लामी भाइयों ने क़ित़ार में लग कर आप के चेह्रए मुबारक की ज़ियारत की. मर्कज़ी मज्लिसे शूरा के एक रुक्न ने आप के इन्तिक़ाल की तफ़्सीलात कुछ इस त़रह़ से बताईं कि

''नमाज़े जुमुआ़ की अदाएगी के बा'द मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने खाना तनावुल फ़रमाया. इस के बा'द कुछ देर घर वालों से महवे गुफ़्तुगू रहे फिर दीनी कुतुब के मुत़ा-लआ़ में मस्रूफ़ हो गए. साढ़े तीन बजे के लगभग वोह आराम करने के लिये अपने घर की निचली मन्ज़िल में आ गए और घर वालों को ताकीद कर दी कि इन्हें नमाज़े

अ़स्र के लिये जगा दिया जाए. नमाज़ का वक़्त होने पर इन की वालिदए मोह़तरमा ने उन्हें पुकारा मगर उन की त़रफ़ से कोई जवाब न आया तो वोह ख़ुद नीचे तशरीफ़ लाईं और देखा कि मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ बे ह़िसो ह़-र-कत पड़े हुए हैं. उन्हों ने फ़ौरन इन के बड़े भाई को फ़ोन किया. वोह फ़ौरन घर पहुंचे और मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ को ले कर हस्पताल की त़रफ़ रवाना हो गए. वहां पहुंचने पर डॉक्टरों ने आप عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ का तिब्बी मुआ़इना किया और बताया कि येह तो ह़-र-कते क़ल्ब बन्द होने की वजह से तक़रीबन दो घन्टे पहले ही दा-इये अजल को लब्बैक कह चुके हैं."

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

ईसाले सवाब का आग़ाज़ :

आप के घर के बाहर जम्अ़ होने वाले इस्लामी भाई तिलावते क़ुर्आन और ज़िक्रो दुरूद में मशग़ूल थे और यूं आप को ईसाले सवाब का सिल्सिला दफ़्न होने से पहले ही शुरूअ़ हो गया. اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی ذٰلِکَ

तख़्ताए ग़ुस्ल पर मुस्कराहट :

रात तक़रीबन 10:00 बजे मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ग़ुस्ल दिया गया. आप को ग़ुस्ल देने वाले इस्लामी भाइयों का बयान है कि हम ने जागती आंखों से देखा कि मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दौराने ग़ुस्ल मुस्करा रहे थे. इस की गवाही वहां पर मौजूद दीगर इस्लामी भाइयों ने भी दी है. गोया कि आप सय्यिदुना शैख़ सा'दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इस शे'र के मिस्दाक़ थे :

याद दारी कि ज़ादन तू हमा ख़न्दां ब दन्द तू गिरयां
आं चुनां ज़ी कि वक़्ते मुर्दन तू हमा गिरयां शवन्द तू ख़न्दां

या'नी याद रख ! जब दुन्या में आया था तो तू रो रहा था और लोग

मुस्करा रहे थे, इस त़रह़ की ज़िन्दगी बसर कर कि तेरी मौत के वक़्त लोग रो रहे हों और तू मुस्करा रहा हो.

(श-ज-रए अ़त्तारिय्यह, स. 30, मक-त-बतुल मदीना)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

ना'त ख़्वानी के दौरान होंटों की जुम्बिश :

गुस्ल दिये जाने के बा'द इस्लामी भाइयों ने मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के गिर्द जम्अ़ हो कर ना'त ख़्वानी शुरूअ़ कर दी. तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह (मुफ़्ती कोर्स) के साले दुवुम के एक त़ालिबुल इ़ल्म का बयान है कि मैं ने देखा कि ना'त ख़्वानी के दौरान उस्ताज़े मोह़तरम मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज मौलाना मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْغَنِی के लबहाए मुबा-रका भी जुम्बिश कर रहे थे.

रात तक़्रीबन 10:00 बजे आप के ज-सदे मुबारक को दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची लाया गया. जहां इस्लामी भाइयों ने आप के गिर्द जम्अ़ हो कर ना'त ख़्वानी की, तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रो दुरूद का भी सिल्सिला रहा.

होंट हिलने लगे

जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना के एक त़ालिबे इ़ल्म का बयान है कि

"اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जब रात के वक़्त मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ाजी मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْغَنِی का ज-सदे मुबारक इस्लामी भाइयों को ज़ियारत करवाने के लिये उन के घर से फ़ैज़ाने मदीना लाया गया तो इस दौरान ना'त ख़्वानी जारी थी

और ज़ाएरीन ज़ियारत से मुस्तफ़ीज़ हो रहे थे, जब ना'त ख़्वां इस्लामी भाई ने ''का'बे के बदरुद्दुजा तुम पे करोड़ों दुरूद'' पढ़ना शुरूअ़ किया तो इस दौरान मैं मुफ़्ती साहिब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के बहुत क़रीब था और बिग़ैर किसी रुकावट के मुसल्सल उन के चेहरए मुबारक की ज़ियारत किये जा रहा था. अचानक एक शे'र पर मुझे मुफ़्ती साहिब عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ के होंटों की जुम्बिश महसूस हुई लेकिन मैं ने उसे महज़ अपना गुमान समझा कि हो सकता है येह मेरी नज़र की ख़ता हो लेकिन बा'द में इसी त़रह़ होंटों के हिलने के बारे में एक और इस्लामी भाई ने भी बताया, इस के इ़लावा भी कम अज़ कम दो इस्लामी भाइयों ने इस की तस्दीक़ की।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

बानिये दा'वते इस्लामी مَدَّ ظِلُّہُ الۡعَالِی की आमद

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के विसाल के वक़्त शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ इस्लामी किताबों के तह़रीरी काम के सिल्सिले में मुल्क से बाहर थे क्यूंकि पाकिस्तान में मौजूद होने की सूरत में ख़ल्क़त का आप की त़रफ़ इस क़दर रुजूअ़ होता है कि आप यक्सूई से तह़रीरी काम नहीं कर पाते. रात आठ बजे के बा'द अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّہُ الۡعَالِی को मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ के इन्तिक़ाल की इत्तिलाअ़ दी गई. दर अस्ल बाबुल मदीना से जाने वाला फ़ोन आप के साथ मुक़ीम इस्लामी भाई ने वुसूल (Receive) किया और उस ने अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّہُ الۡعَالِی को फ़ौरन न बताया बल्कि जब इत्मीनान से रात के खाने और चाय से

फ़ारिग़ हो चुके तब इस्लामी भाई के लब वा हुए और उन की आंखों से रुके हुए अश्क बह निकले, उन्हों ने रो रो कर मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी की रेहूलत की ख़बरे वहशत असर अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِیْ को सुनाई. अपने म-दनी बेटे की दुन्या से रुख़्सती की दर्द अंगेज़ ख़बर मिलने पर बानिये दा'वते इस्लामी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِیْ भी सदमे से निढाल नज़र आने लगे और रिक़्क़ते क़ल्बी की वजह से आप की चश्माने मुबा-रका में आंसूओं के सितारे झिलमिलाने लगे.

आप مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِیْ ब ज़रीअए हवाई जहाज़ रात तक़रीबन 3:15 बजे बाबुल मदीना कराची पहुंच गए और एरपोर्ट से तक़रीबन 3:45 बजे सीधे फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची तशरीफ़ ले आए और अपने म-दनी बेटे मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी हाजी फ़ारूक़ अत्तारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِیْ को अपनी क़ुर्बत का श-रफ़ बख़्शा और उन के लिये दुआ भी की.

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَیْهِ الرَّحْمَة की नमाज़े जनाज़ा

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी हाफ़िज़ मुहम्मद फ़ारूक़ अल अत्तारिय्युल म-दनी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِیْ की नमाज़े जनाज़ा सुब्ह तक़रीबन 10:30 बजे दा'वते इस्लामी के आलमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में अदा की गई. आप عَلَیْهِ الرَّحْمَة की सआदतें उस वक़्त अपने उ़रूज पर पहुंचीं जब आप के मुर्शिदे करीम, ज़माने के वली, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِیَه ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और इस के बा'द ऐसी रिक़्क़त अंगेज़ दुआ की कि ह़ाज़िरीन अपने जज़्बात पर काबू न रख सके और फूट फूट कर रोने लगे, उस रिक़्क़त अंगेज़ दुआ के अल्फ़ाज़

कुछ यूं थे :

नमाज़े जनाज़ा के बा'द की रिक़्क़त अंगेज़ दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَللّٰھُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّ فِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

''या रब्बल मुस्त़फ़ा جَلَّ جَلَالُہٗ ! हम सब के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम सब की मग़्फ़िरत फ़रमा, प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा. ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मर्हूम मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की मग़्फ़िरत फ़रमा, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अ़न्क़रीब क़ब्र की तन्हाइयों में इन्हें तन्हा छोड़ दिया जाएगा, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारे ह़ाजी फ़ारूक़ की क़ब्र पर रह़मतो रिज़्वान के फूल बरसा, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! क़ब्र की वह़शत और तंगी को दूर फ़रमा, इन की क़ब्र में अम्न नसीब फ़रमा, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! क़ब्र मुजरिमों को इस त़रह़ दबाती है कि पस्लियां टूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं, लेकिन तेरे नेक बन्दों को इस त़रह़ दबाती है जैसे मां अपने बिछड़े हुए ला'ल को सीने से चिमटा लेती है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम तुझ से रह़्म की दर-ख़्वास्त करते हैं कि हमारे फ़ारूक़ भाई को क़ब्र इसी त़रह़ दबाए जिस त़रह़ मां अपने बिछड़े हुए लाल को शफ़्क़त से मामता भरी गोद में छुपा लेती है, अपने सीने से चिमटा लेती है, ऐ मौला عَزَّوَجَلَّ ! मर्हूम की क़ब्र को ता ह़द्दे नज़र वसीअ़ फ़रमा, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे फ़ारूक़ पे कोई तक्लीफ़ न आए, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे फ़ारूक़ के सारे गुनाह मुआ़फ़ कर दे, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे फ़ारूक़ को क़ब्र में वह़शत न हो, घबराहट न हो, तंगी न हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे फ़ारूक़ को अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जल्वों में गुम कर देना, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के

रुख़े रोशन का वासिता, मेरे फ़ारूक़ की क़ब्र को रोशन कर दे, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे फ़ारूक़ को बख़्श दे, तुझे तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासिता, मुर्सलीन का वासिता, सह़ाबा का वासिता, ताबेईन का वासिता, सय्यिदुश्शु-हदाअ इमामे ह़ुसैन का वासिता, सय्यिदुना अ़ब्बास अ़लम दार का वासिता, अ़ली अक्बर व अ़ली अस्ग़र का वासिता, करबला के हर शहीद व असीर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ اَجْمَعِیْن) का वासिता मेरे फ़ारूक़ की क़ब्र को जन्नत का बाग़ बना दे, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! येह आ़लिम थे, इन्हों ने तेरे दीन की जो ख़िदमत की, उसे क़बूल कर ले, ऐ मौला عَزَّوَجَلَّ ! येह बेचारे भरी जवानी में हम से रुख़्सत हो गए, ऐ रह़मत वाले मौला عَزَّوَجَلَّ ! तेरी रह़मत के ह़वाले, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरी रह़मत के ह़वाले, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरी रह़मत के ह़वाले, मौला عَزَّوَجَلَّ ! मेरे ग़ौसे पाक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का वासिता मेरे फ़ारूक़ पर करम कर दे, मेरे आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का वासिता, मेरे पीरो मुर्शिद सय्यिदी कुत्बे मदीना (ज़ियाउद्दीन म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِيّ) का वासिता मेरे फ़ारूक़ पर करम कर दे, इन्हें रह़मतों के साए तले जगह दे दे, इन की क़ब्र पर रह़मतों का साइबान ख़ड़ा हो जाए, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इन के फ़ुयूज़ो ब-रकात क़ियामत तक जारी रहें, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! सब को ईमान की सलामती नसीब कर दे, हम सब को मदीनए मुनव्वरह में ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा मह़बूब के जल्वों में शहादत नसीब कर दे, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़ता कर दे, इलाहल आ़-लमीन ! मेरे फ़ारूक़ को भी मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जन्नत में पड़ोस दे दे, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इन के घर वालों को इन के दोस्तों को और दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मज्लिसे शूरा को सब्रे जमील अ़ता कर दे

और इस सब्र पर अज्र अ़ता फ़रमा, इलाहल आ़-लमीन ! इन के घर वालों को शिक्वा व शिकायत से बचाना, सब्र सब्र और सब्र अ़ता फ़रमाना, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इन की ज़बान से तुझे नाराज़ करने वाला कोई भी कलिमा न निकले, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारा इस बात पर ईमान है कि हम सब को मरना है मगर हम बन्दे हैं इस लिये रोते हैं, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें गिर्यए रह़मत नसीब कर दे, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! उस गिर्यए रह़मत का वासित़ा जो तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने शहज़ादे सय्यिदुना इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात पर किया था, उन पाकीज़ा मुक़द्दस आंसूओं का वासित़ा ह़क़ीक़ी मा'नों में सब्र और ऐसा सब्र अ़ता फ़रमा जो तुझे पसन्द हो, मौला عَزَّوَجَلَّ ! पूरी उम्मत की बख़्शिश कर दे, मौला عَزَّوَجَلَّ ! ईमान की सलामती अ़ता फ़रमा दे, ईमान की क़द्र नसीब कर दे, अ़-मले सालेह़ नसीब कर दे, "

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَآئِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَان ......امين بجاه النبی الکريم صلی الله تعالی عليه وسلم "

जनाज़ा ब सूए सह़राए मदीना

नमाज़े जनाज़ा की अदाएगी के बा'द आप के मुर्शिदे कामिल, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने आप के जनाज़े को कन्धा दिया. जनाज़े को कन्धा देने के ख़्वाहिश मन्द इस्लामी भाइयों की कसीर ता'दाद के पेशे नज़र जनाज़े की चार पाई के साथ लम्बे लम्बे बांस बांधे गए थे. ह़ज़ारों इस्लामी भाई, मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى को ले कर तदफ़ीन के लिये

जुलूस की शक्ल में **सहराए मदीना** की त़रफ़ रवाना हुए. आप عَلَيْهِ الرَّحْمَة के अ़लाक़े गुलशने इक़्बाल (जो कि फ़ैज़ाने मदीना से चन्द किलो मीटर दूर है वहां) तक जनाज़ा कन्धों पर ले जाया गया फिर एक ट्रक पर आप का जनाज़ा रखा गया, उसी ट्रक पर अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي , आप के बड़े शहज़ादे ह़ज़रते मौलाना ह़ाजी अबू उसैद अह़मद उ़बैद रज़ा अल अ़त्तारिय्युल म-दनी سَلَّمَهُ الْغَنِي और मु-तअ़द्दद अराकीने शूरा भी सुवार थे और यूं आप عَلَيْهِ الرَّحْمَة अपने मुर्शिदे कामिल دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मइय्यत में सूए सह़राए मदीना (नज़्द टोल प्लाज़ा, सुपर हाइवे बाबुल मदीना कराची) रवाना हो गए. रास्ते भर ज़िक्रो दुरूद और ना'त ख़्वानी का सिल्सिला जारी रहा।

तदफ़ीन की क़ैफ़िय्यात

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي को सह़राए मदीना में दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मज्लिसे शूरा के मर्ह़ूम निगरान बुलबुले रौज़तुर्रसूल ह़ाजी मुह़म्मद मुशताक़ अह़मद अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي के दाएं पहलू में दफ़्न किया गया. आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को आप के मुर्शिदे कामिल, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मौजूदगी में तक़रीबन 2:00 बजे दो पहर दा'वते इस्लामी की मुख़्तलिफ़ मजालिस के इस्लामी भाइयों ने सुन्नत के मुत़ाबिक़ तय्यार की जाने वाली क़ब्र में उतारा. मदीने शरीफ़ के बहुत से तबर्रुकात आप के सीने पर रखे गए और अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي की चादरे मुबारक भी आप के कफ़न के ऊपर बत़ौरे तबर्रुक डाल दी गई. इस दौरान पुर सोज़ ना'त

ख़्वानी का सिल्सिला भी जारी रहा. क़ब्र पर रखी जाने वाली सिलों की अन्दरूनी जानिब मिट्टी का लेप भी किया गया था, जब आख़िरी सिल रखी जा रही थी तो अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِی ने मुज़्तरिब हो कर इर्शाद फ़रमाया : "ठहर जाओ, मुझे अपने म-दनी बेटे का आख़िरी दीदार कर लेने दो." दफ़्न करने के बा'द क़ब्र पर जो मिट्टी डाली गई उस पर ख़त्म शरीफ़ पढ़ा गया था. **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने वहां पर मौजूद इस्लामी भाइयों को क़ब्र पर मिट्टी डालने का त़रीक़ा बताते हुए कुछ इस त़रह़ से इर्शाद फ़रमाया कि मुस्तह़ब येह है कि सिरहाने की त़रफ़ दोनों हाथों से इसी क़ब्र की तीन बार मिट्टी डालें पहली बार कहें : مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ (इसी से हम ने तुम को पैदा किया) दूसरी बार कहें : وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ (और इसी में तुम को लौटाएंगे) और तीसरी बार कहें : وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى (और इसी से तुम को दोबारा निकालेंगे)

बाक़ी मिट्टी हाथ या खुर्पी या फावड़े वग़ैरा जिस चीज से मुम्किन हो क़ब्र पर डालें और जितनी मिट्टी क़ब्र से निकली उस से ज़ियादा डालना मक्रूह है. (अल जौहरतुन्नय्यिरह, स. 141, बाबुल मदीना कराची)

फिर अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِی ने मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात तल्क़ीन किये।

क़ब्र पर अज़ान

इस के बा'द बानिये दा'वते इस्लामी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِی ने मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की क़ब्र पर ख़ुद अज़ान दी और क़ब्र के सिरहाने की जानिब खड़े हो कर सूरए ब-क़रह الٓمّٓ से مُفْلِحُوْنَ तक तिलावत की. इस के बा'द शहज़ादए अ़त्तार मौलाना अबू उसैद अह़मद उ़बैद रज़ा अल अ़त्तारिय्युल म-दनी سَلَّمَهُ الْغَنِی ने सूरए ब-क़रह

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से ख़त्म सूरत तक तिलावत की.

दा'वते इस्लामी हरगिज़ मत छोड़िये !

तदफ़ीन के बा'द अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِیْ ने वहां पर मौजूद इस्लामी भाइयों को दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वफ़ादार रहने की कुछ इस त़रह़ से ताकीद की :

''आप की किसी ज़िम्मादारे दा'वते इस्लामी से ख़्वाह कैसी ही नाराज़गी हो जाए, दा'वते इस्लामी से नाराज़ न हुवा करें, चाहे मुझ से नाराज़गी हो जाए, निगराने शूरा से नाराज़गी हो जाए, बेशक मर्कज़ी मज्लिसे शूरा से नाराज़गी हो जाए लेकिन दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये और अ़-मली त़ौर पर दा'वते इस्लामी का म-दनी काम भी करते रहिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی ! क़ब्र में भी आराम नसीब होगा, ह़श्र में भी काम्याबी नसीब होगी اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی . صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी हमारे म-दनी आक़ा की ग़ुलामी करने वालों की तह़रीक है. اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है और दा'वते इस्लामी वालों से भी प्यार है. (दा'वते इस्लामी वालों से मेरी मुराद येह नहीं कि) जो ज़बान से तो येह दा'वा करे कि मैं दा'वते इस्लामी वाला हूं लेकिन जब मौक़अ़ मिले तो दा'वते इस्लामी को नुक़्सान पहुंचाए, इस की काट करे बल्कि जो वाक़ेई दिलो जान से दा'वते इस्लामी वाला है मुझे (तो) उस से प्यार है, मैं दा'वते इस्लामी का हूं और मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है, जो मेरे हैं, (वोह सुन लें कि) मेरी दा'वते इस्लामी को कभी भी न छोड़ना. येह मेरी वसिय्यत है, कुछ भी हो जाए, आप को किसी ज़िम्मादार से कैसा ही इख़्तिलाफ़ हो जाए, दा'वते इस्लामी को मत छोड़ना, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! ढेरों भलाइयां नसीब होंगी, हम ख़त़ाकार इन्सान हैं भूल कर जाते हैं, मैं

भी भूलों से मुबर्रा नहीं, बेचारे मर्कज़ी मज्लिसे शूरा वाले भी ख़ताएं करते होंगे, मुबल्लिग़ीन भी ग़-लतियां करते होंगे, हमें चाहिये कि प्यार महब्बत से एक दूसरे की इस्लाह़ करते रहें बस कभी भी दा'वते इस्लामी को मत छोड़ना, इस तह़रीक को चलाते रहना और येह ज़ेह्न बनाए रहें कि मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ ."

तजदीदे अ़ह्दे वफ़ा

(इस के बा'द वहां पर मौजूद इस्लामी भाइयों की ख़्वाहिश पर अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِی ने इस त़रह़ अ़ह्दे वफ़ा लिया)

"इरादा करता हूं मैं कि दा'वते इस्लामी के साथ आख़िरी दम तक वाबस्ता रहूंगा, चाहे किसी बड़े से बड़े ज़िम्मादार से कितना ही बड़ा इख़्तिलाफ़ क्यूं न हो जाए मैं दा'वते इस्लामी को नहीं छोड़ूंगा और हो सका तो उस की इस्लाह़ करूंगा, वरना जब तक शरीअ़त वाजिब न करे उस वक़्त तक इस इख़्तिलाफ़ का किसी से तज़्किरा नहीं करूंगा, अपनी दा'वते इस्लामी को नुक़्सान नहीं पहुंचाऊंगा. (फिर अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِی ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की) ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरी दा'वते इस्लामी का बाग़ आबाद रहे, कभी भी ख़ज़ां के तेज़ व तुन्द झोंके इस को पामाल न कर सकें. اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

बा'दे तदफ़ीन पुर सोज़ दुआ

तदफ़ीन के बा'द शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये

दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कुछ इस त़रह़ से दुआ़ की :

''اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ، يَااَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا رَبَّنَا يَا رَبَّنَا يَا رَبَّنَا يَا رَبَّنَا يَا رَبَّنَا يَا اللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ جَزَى اللّٰهُ عَنَّا سَيِّدَنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم مَا هُوَ اَهْلُه اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ

या रब्बल मुस्त़फ़ा جَلَّ جَلَالُهٗ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम सब के गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी मग़्फ़िरत कर दे, प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत की मग़्फ़िरत कर दे, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम ने अपने **ह़ाजी फ़ारूक़** को तेरी रह़मत के सिपुर्द किया, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! येह तेरी रह़मत के ह़वाले हैं, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू ही बिगड़ी बनाएगा, तू ही इस की क़ब्र को रोशन करेगा हम बत्ती (लाइट) लगा नहीं सकते, अगर लगाएं भी तो रोशनी नहीं हो सकती, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर से हमारे ह़ाजी फ़ारूक़ की क़ब्र को जगमगा दे, तुझे नूर वाले मह़बूब عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा, बेचारे की क़ब्र नूर से भर दे, ऐ रब्बे बे नियाज़ ! तेरी ख़ुफ़्या तदबीर किस के बारे में क्या है कोई नहीं जानता, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरा क्या होगा ! ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू बेचारे की क़ब्र को रह़मतो रिज़्वान के फूलों से ढक दे, ऐ मालिक रह़म कर दे, करम कर दे, या अर-ह़मर्राह़िमीन ! मेरा **फ़ारूक़** मेरा म-दनी बेटा तेरी रह़मत के सिपुर्द है, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस से आख़िरी सांस तक राज़ी था, (तू भी इस से राज़ी हो जा) या

रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं इस से राज़ी था, आप भी राज़ी हो जाएं, या ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! मैं इस से राज़ी हूं मेरे फ़ारूक़ से आप भी राज़ी हो जाएं इस पर भी और मेरे मुशताक़ पर भी करम हो जाए, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं मुशताक़ से भी राज़ी हूं (तू भी इस से राज़ी हो जा), या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं मुशताक़ से भी राज़ी हूं, (आप भी इस से राज़ी हो जाएं) या ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! मैं मुशताक़ से भी राज़ी हूं, (आप भी इस से राज़ी हो जाएं) मैं हर दा'वते इस्लामी वाले से, दा'वते इस्लामी का काम इस्तिक़ामत से करने वालों से राज़ी हूं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन के सदक़े मुझ से राज़ी हो जा, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे जामिअ़तुल मदीना के त़-लबा के सदक़े मुझ से राज़ी हो जा, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उ़-लमाए अहले सुन्नत के सदक़े में मुझ से राज़ी हो जा,

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो मैं शाद रहूंगा या रब
गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी
हाए मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे मुशताक़ और फ़ारूक़ से हमेशा के लिये राज़ी हो जा, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन दोनों की क़ब्रों को नूर से भर दे, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! नूरे ह़बीब के जल्वों से इन दोनों की क़ब्रें आबाद कर दे, इन दोनों के सदक़े मुझ ग़रीब से भी राज़ी हो जा, हमें तौबा पर इस्तिक़ामत नसीब कर दे, हमें गुनाहों से बचा ले मौला, हम सब को म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना दे, हम सब को मुख़्लिस आ़शिक़े रसूल बना दे, एक ग़रीबुल वत़न बेचारा कोई मुसाफ़िर भी यहां (या'नी

सह़राए मदीना में बहुत पहले से) मदफ़ून है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उस पर करम कर दे, उस की बख़्शिश कर दे, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उस के भी द-रजे बुलन्द कर दे, इलाहल आ़-लमीन ! हम सब को मदीने में ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत नसीब फ़रमा दे, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में हमें ह़ाजी फ़ारूक़, ह़ाजी मुशताक़ और हर दा'वते इस्लामी वाले और हर दा'वते इस्लामी वाली को म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा दे, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें तो मांगना भी नहीं आता, जो हम ने मांगा वोह भी अ़त़ा कर दे और जो नहीं मांगा वोह भी अ़त़ा कर दे, इलाहल आ़-लमीन हम ह़िसाब के क़ाबिल नहीं हैं, तू हमें बे ह़िसाब बख़्श दे, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, अम्बियाअ व मुर्सलीन (عَلَيْهِمُ السَّلَام) का सदक़ा, सह़ाबा व ताबेईन (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم) का वासित़ा, तमाम औलियाए किराम (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم) का वासित़ा, ख़ुसूसन मेरे मुर्शिद ग़ौसे आ'ज़म (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) का वासित़ा, मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) का वासित़ा, मेरे पीरो मुर्शिद कुत़्बे मदीना ज़ियाउद्दीन म-दनी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) का वासित़ा इन (या'नी ह़ाजी फ़ारूक़) की मग़्फ़िरत कर दे, इन्हें बे ह़िसाब बख़्श दे, इन की क़ब्र को नूर से भर दे, इन की क़ब्र को ह़द्दे नज़र तक वसीअ़ कर दे, इन की क़ब्र को जन्नत का बाग़ बना दे, येह दुआ़एं ह़ाजी मुशताक़ के ह़क़ में भी क़बूल फ़रमा, हम सब के ह़क़ में भी क़बूल फ़रमा, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मह़बूब की मग़्फ़िरत फ़रमा दे, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मर्ह़ूम के लवाह़िक़ीन को सब्रे जमील और सब्रे जमील पर अज्रे जज़ील अ़त़ा फ़रमा, इलाहल आ़-लमीन ! ह़ाजी फ़ारूक़ के वालिद साह़िब, इन के भाइयों, भतीजों,भांजों सब को येह तौफ़ीक़ दे कि येह

सब के सब पाबन्दी के साथ दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हों, सर पर मुस्तक़िल इमामा शरीफ़ का सुन्नतों भरा ताज सजा लें, और ह़ाजी फ़ारूक़ के ईसाले सवाब के लिये हर महीने तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वाले बन जाएं, इन के घर की ख़्वातीन को इस्लामी बहनों के हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शरीक होने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा.

اِنَّ اللّٰـهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا۝

صلى الله على النبى الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يارسول الله ، آمين

بجاه النبى الامين صلى الله تعالىٰ عليه واله وسلم ، لا اله الا الله محمد رسول الله

मज़ार पर 12 घन्टे रुकने वाले

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के तरग़ीब दिलाने पर 265 इस्लामी भाई तक़रीबन 12 घन्टे तक मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَيْهِ الرَّحْمَة के मज़ार पर रुके रहे. इन रुकने वालों में जामिअ़तुल मदीना के तक़रीबन 20 म-दनी उ़-लमाअ, 88 त़-लबा, मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले 157 इस्लामी भाई शामिल थे. इस दौरान ना'त ख़्वानी, इस्लाही बयान और ज़िक्रो दुरूद के साथ साथ बा जमाअ़त नमाज़ों की अदाएगी का सिल्सिला रहा. वहीं से एक म-दनी क़ाफ़िला हाथों हाथ तय्यार हो गया जो सह़राए मदीना में 7 दिन बा'द बाबुल इस्लाम सिन्ध सत़ह़ पर होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ तक वहीं मुक़ीम रहा.

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَيْهِ الرَّحْمَة का तीजा

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी मुहम्मद फ़ारूक़ अल अत्तारिय्युल म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِيّ के ईसाले सवाब के लिये इन के तीजे के मौक़अ पर इज्तिमाए ईसाले सवाब शबे पीर 21 मुहर्रमुल हराम 1427 हि. ब मुताबिक़ 19 फ़रवरी 2006 ई. फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में मुन्अक़िद किया गया. जिस में शरीक होने वाले इस्लामी भाइयों ने पहले तिलावते क़ुर्आन और ज़िक्रो दुरूद की सआदत हासिल की. इस के बा'द बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी र-ज़वी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِيْ का सुन्नतों भरा बयान हुवा. जिस में आप ने मसाइब पर सब्र करने के फ़ज़ाइल बयान किये, फिर मुफ़्ती फ़ारूक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़िन्दगी के कुछ वाक़िआत और म-दनी बहारें भी ज़िक्र कीं और इन से अपनी महब्बत का कुछ इस तरह से इज़हार फ़रमाया :

"आज मेरे फ़ारूक़ की हर तरफ़ धूम है मेरे म-दनी बेटे की क़िस्मत.....(फिर आप مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِيْ ने वोह मक़ामात गिनवाए जहां जहां टेलीफ़ोन और इन्टरनेट के ज़रीए तीजे का बयान सुना जा रहा था. जब दौराने बयान निगराने शूरा ने अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِيْ को लिख कर दिया कि मैं हाथों हाथ शर-ई राहनुमाई के हुसूल के लिये मुफ़्ती फ़ारूक़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तरफ़ रुजूअ किया करता था तो आप مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِيْ ने आजिज़ी करते हुए फ़रमाया) सच्ची बात येह है कि (निगराने शूरा की तरह) मैं भी (शर-ई मसाइल वग़ैरा के सिल्सिले में कभी कभार) फ़ारूक़ भाई की तरफ़ रुजूअ करता था और बारहा इन से मश्वरे भी किया करता था, ख़ुदा की क़सम ! इसी वजह से मुझे ज़ियादा सदमा है वरना मौत तो बरहक़ है, आनी ही आनी है. (इस के बा'द फ़रमाया) इन को हिफ़ाज़ते ईमान की ऐसी फ़िक्र होती थी कि आप को क्या

बताऊं ? मैं ने ख़ुद इन के मुआ़-मलात को क़रीब से देखा है.

किसी बात से रुजूअ़ करने में कभी मैं ने इन की पेशानी पर बल नहीं देखा. कई बार ऐसा हुवा कि बा'ज़ मसाइल में इन्हों ने मुझ से गुफ़्तुगू फ़रमाई, फिर या तो मुझे क़ाइल कर दिया या ख़ुद क़ाइल हो गए. मगर मैं ने कभी इन को नाराज़ होते नहीं देखा कि मैं ने इतनी किताबें पढ़ रखी हैं,..... बल्कि बारहा आ़जिज़ी फ़रमाई और मुझ से येही कहते रहते कि आप रहनुमाई फ़रमाएं. कई बार ऐसा हुवा कि मैं ने किसी मस्अले में इन की राय पूछी तो कहने लगे जैसे आप फ़रमाएं. कई बार फ़तावा में ज़रूरत पड़ती थी तो मुझ से मश्वरा करते थे कि येह सुवाल आया है, इस का क्या जवाब होना चाहिये और मैं ने येह लिखा है, अगर मैं कहता था :''येह जवाब यूं नहीं यूं होना चाहिये'' तो येह मान जाते और फ़तवा रोक देते या फिर मुझे क़ाइल करने की कोशिश करते. اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने इन की आ़जिज़ी के बहुत से मुआ़-मलात देखे हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन पर करोड़ों रह़मतें नाज़िल फ़रमाए.

इन्हों ने मुझ से कई बार कहा कि मुझे तमाम तर तन्ज़ीमी ज़िम्मादारियों से छुड़ा कर अपने पास रख लें और मुझ से काम लेते रहें, आप जो कहेंगे, मैं करता रहूंगा. लेकिन मैं इन्हें जवाब देता कि मैं आप को कैसे रख लूं, आप काम के आदमी हैं, और काम के आदमी को घर पर नहीं बिठाया जाता. येह भी इसरार करते रहे कि चलिये कम अज़ कम मेरे घर पर आ कर रहें. इन्हों ने मुझे अपना घर दिखाया, और कहने लगे कि जैसा कमरा आप कहेंगे, हम बना देंगे, नीचे हमारा मकान किराए पर है और फ़ुलां तारीख़ को ख़ाली होने वाला है. हम मुस्तक़िल तौ़र पर ख़ाली करा लेंगे और अब नया इजारा नहीं करेंगे. आप यहीं रह

जाइये हमारे घर वाले भी आप के मुन्तज़िर हैं. लेकिन मेरी कुछ मजबूरियां थीं जिन की वजह से मैं वहां नहीं रह सकता था. क्यूंकि इन का घर आबाद अ़लाक़े में है और मुझे तह़रीरी काम के लिये यक्सूई चाहिये. जब अ़वाम को पता चलता तो वोह मुलाक़ात के लिये वहां पहुंच जाते. बहर ह़ाल इन की ख़्वाहिश थी और कई बार इन्हों ने कहा कि हमारे हां आ कर रहिये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन को जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए.''

(इस बयान को मुकम्मल त़ौर पर सुनने के लिये इस बयान का केसेट ''मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी के तीजे का बयान'' मक-त-बतुल मदीना से ह़ासिल फ़रमाएं.)

बाबुल इस्लाम के इज्तिमाअ़ में दुआ़ के अल्फ़ाज़

(बाबुल इस्लाम (सिन्ध) सत़ह़ पर होने वाले तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّهُ العَالِی ने मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के लिये इस त़रह़ दुआ़ की) हमारे मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ाजी मुह़म्मद फ़ारूक़ रुक्ने शूरा थे और हमारे दिलों की धड़कन थे, बहुत क़ीमती हीरे थे, उन्हों ने बहुत मोह़तात़ ज़िन्दगी गुज़ारी, वोह ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के पैकर थे. ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! मेरा इन के बारे में हुस्ने ज़न है कि येह तेरे वली थे. ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! मेरे इस हुस्ने ज़न की लाज रख ले और इन की मग़्फ़िरत फ़रमा दे.

ईसाले सवाब :

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कसीर इस्लामी भाइयों ने मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के लिये बहुत ज़ियादा ईसाले सवाब किया. वफ़ात की तीसरी रात तक दुन्याए दा'वते इस्लामी से मौसूल होने वाले नेकियों के तह़ाइफ़ की कुछ तफ़्सील मुला-ह़ज़ा हो :

कुर्आने पाक	**69281**	उन्हत्तर ह़ज़ार दो सो इक्यासी

मुख़्तलिफ़ पारे **90423** नव्वे हज़ार चार सो तेईस

मुख़्तलिफ़ सूरतें **388744154** अड़तीस करोड़ सतासी लाख चवालीस हज़ार एक सो चोवन

हज **5** पांच

उम्रह **17** सत्तरह

तवाफ़ **7** सात

कलिमा शरीफ़ **57921215** पांच करोड़ उनासी लाख इक्कीस हज़ार दो सो पन्दरह

दुरूद शरीफ़ **2397742010** दो अरब उन्तालीस करोड़ सतत्तर लाख बयालीस हज़ार दस

तस्बीहात **2061656** बीस लाख इक्सठ हज़ार छ सो छप्पन

म-दनी क़ाफ़िला **1961** उन्नीस सो इक्सठ

इस्लामी बहनों की तरफ़ से शर-ई पर्दा (म-दनी बुर्क़अ) की निय्यतें **852** आठ सो बावन

म-दनी बहारें

(1) जामिअतुल मदीना फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा मेट्रो विल बाबुल मदीना (कराची) के तालिबे इल्म ने ख़्वाब देखा कि मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ अत्तारी म-दनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का जनाज़ा सुनहरी जालियों के सामने रखा हुवा है, और दीगर मुफ़्तियाने किराम और उ-लमाए किराम भी वहां साथ थे तो इतने में फिर इस ख़्वाब ही में तालिबे इल्म ने मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ अत्तारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के चेहरे से नक़ाब उठाया तो मुफ़्ती फ़ारूक़ साहिब ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में मशगूल थे और ए'लान किया गया कि सब ज़ियारत कर लें.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

(2) तदफ़ीन के बा'द पहली ही रात मज़ार शरीफ़ पर रुक जाने

वाले एक इस्लामी भाई ने बताया कि मैं ने ख़्वाब में देखा कि मस्जिदे न-बवी शरीफ़ के सुहाने नज़ारे हैं. अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِيْ, ह़ाजी मुशताक़ अ़त्तारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه , मुफ़्ती फ़ारूक़ अ़त्तारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और निगराने शूरा मौजूद हैं. अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِيْ ह़ाजी मुशताक़ अ़त्तारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से दर्याफ़्त फ़रमा रहे हैं कि आप के बा'द तो हम ने ह़ाजी इमरान को निगरान बनाया था अब मुफ़्ती फ़ारूक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की जगह किस को ज़िम्मादारी दें.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

(3) एक नौ जवान का बयान अपने अन्दाज़ में पेश किया जाता है. ''मैं 18 मुह़र्रमुल ह़राम 1427 हि. बरोज़ हफ़्ता सुब्ह़ के वक़्त दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना से कुछ फ़ासिले से गुज़र रहा था कि मैं ने सुरीली आवाज़ में ना'त शरीफ़ की आवाज़ सुनी. उस आवाज़ की सम्त चलता हुवा फ़ैज़ाने मदीना के क़रीब आ पहुंचा तो वहीं टेप रेकॉर्डर पर मर्ह़ूम ह़ाजी मुशताक़ अ़त्तारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ना'तें चलाई जा रही थीं. वहां सब्ज़ इमामा वालों की भीड़ देख कर मा'लूमात की तो पता चला कि मुफ़्ती फ़ारूक़ नामी, रुक्ने मज्लिसे शूरा की फ़ौतगी हो गई है. मैं फ़ैज़ाने मदीना में दाख़िल हो गया फ़िनाए मस्जिद में मर्ह़ूम का ज-सदे ख़ाकी रखा हुवा था और आख़िरी दीदार के लिये लम्बी क़ित़ार लगी हुई थी. मैं भी उस क़ित़ार में खड़ा हो गया और अपनी बारी पर मैं ने मर्ह़ूम का दीदार किया, कुछ देर के बा'द नमाज़े जनाज़ा हुई मैं उस में भी शरीक हो गया. मैं दा'वते

इस्लामी से बिल्कुल ना वाक़िफ़ था, मेरे लिये बिल्कुल नया माहोल था और अन्दाज़ भी दूसरे जनाज़ों से बहुत मुख़्तलिफ़ था, रिक़्क़त अंगेज़ फ़ज़ा और नूरानी चेहरों ने मेरे दिल को अपनी गरिफ़्त में ले लिया. मैं अपना काम काज सब भुला कर जनाज़े के साथ चल पड़ा, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और इश्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मिले जुले जज़्बात नीज़ आहों और सिस्कियों के साथ मर्हूम को सिपुर्दे ख़ाक किया गया, मैं क़ल्ब में अ़जीब सी कैफ़िय्यत ले कर पलटा.

रात जब सोया तो ख़्वाब में एक कमरे के गिर्द भीड़ सी देखी, लोग उस कमरे में झांक झांक कर देख रहे थे मैं ने भी झांका तो क्या देखता हूं कि तीन चार पाइयां बिछी हैं और तीन साहिबान चादर ओढ़े उन पर लेटे हुए हैं. चेहरा किसी का नज़र नहीं आ रहा था. किसी ने मुझ से कहा, एक चार पाई पर इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़-सने मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं तो दूसरी पर इमामे अ़र्श मक़ाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन शहीदे करबला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आराम फ़रमा रहे हैं. तीसरी चार पाई वाले का नाम मुझे नहीं बताया गया मगर उन बुज़ुर्ग ने ख़ुद ही अपने मुंह से चादर हटा ली तो मैं येह देख कर हैरान हो गया कि आज मैं ने जिन का आख़िरी दीदार किया, जनाज़ा पढ़ कर तदफ़ीन में हिस्सा लिया वोही मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारिय्युल म-दनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی मुस्कराते हुए मेरी जानिब देखे जा रहे हैं.

येह ख़्वाब देखने के बा'द मैं ने अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّہُ الْعَالِی के पास जा कर मुलाक़ात की, अपना ख़्वाब भी सुनाया, उन्हों ने मुझ पर काफ़ी शफ़्क़त की और म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र वग़ैरा की अच्छी

अच्छी निय्यतें करवाईं. और मैं ने म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र के साथ साथ दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में शुमूलिय्यत की निय्यत का भी इज़हार किया.''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो.

(4) एक इस्लामी बहन का बयान है कि मैं ने ख़्वाब में देखा कि जन्नत का मन्ज़र है और जन्नत को सजाया जा रहा है. मैं ने किसी से दर्याफ़्त किया कि येह क्यूं सजाई जा रही है तो उस ने जवाब दिया कि यहां फ़ारूक़ म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى तशरीफ़ लाने वाले हैं. फिर मैं ने दोबारा देखा कि जन्नत के ह़सीन नज़ारे हैं और मुफ़्ती फ़ारूक़ साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़िरिश्तों के झुरमट में झूला झूल रहे हैं.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो. اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

म-दनी गुज़ारिश

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारिय्युल म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى का आ'ला मिसाली किरदार इन के मुर्शिदे कामिल, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की म-दनी तरबिय्यत का नतीजा है। इस लिये येह कहना ग़लत़ न होगा कि मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़ात से मु-तअ़ल्लिक़ की जाने वाली तमाम ता'रीफ़ों के मर्जअ़ दर अस्ल अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हैं. जिस का ए'तिराफ़ ख़ुद मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने अपनी ह़यात में इन अल्फ़ाज़

में किया कि ''मुझे जो इ़ज़्ज़त मिली मेरे मुर्शिद का सदक़ा है.''

दा'वते इस्लामी के बानी और अमीर, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से कौन वाक़िफ़ नहीं. आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه वोह यादगारे सलफ़ शख़्सिय्यत हैं जो कसीरुल करामत बुज़ुर्ग होने के साथ साथ अहकामाते इलाहिय्यह की बजा आ-वरी और सु-नने न-बविय्यह की पैरवी करने और करवाने की भी रोशन नज़ीर हैं. आप अपने बयानात, तह़रीरी रसाइल, मल्फ़ूज़ात और मक्तूबात के ज़रीए अपने मु-तअ़ल्लिक़ीन व दीगर मुसल्मानों को इस्लाह़े आ'माल व अ़क़ाइद की तल्क़ीन फ़रमाते रहते हैं. आप के क़ाबिले तक़्लीद मिसाली किरदार, और ताबेए़ शरीअ़त बे लाग गुफ़्तार ने सारी दुन्या में लाखों मुसल्मानों बिल ख़ुसूस नौ जवानों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है.

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह आप ही की कोशिशों का नतीजा है कि इस मुख़्तसर से अ़र्से में दा'वते इस्लामी का पैग़ाम (ता दमे तह़रीर) दुन्या के तक़रीबन 60 मुमालिक में पहुंच चुका है. हज़ारों मक़ामात पर सुन्नतों भरे हफ़्तावार इज्तिमाआ़त और सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले बे शुमार मुबल्लिग़ीन इस मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त इस्लाह़े उम्मत के कामों में मस्रूफ़ हैं कि ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है ''. اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से लाखों मुसल्मानों को गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ मिली और वोह ताइब हो कर सलातो सुन्नत की राह पर गामज़न हो गए. जो बे नमाज़ी थे नमाज़ी

बन गए, बद निगाही के आ़दी निगाहें नीची रखने की सुन्नत पर अ़मल करने वाले बन गए, पर्दे की रिआ़यत न करने वालियां बे पर्दगी से ऐसी ताइब हुईं कि म-दनी बुर्क़अ़ उन के लिबास का हि़स्सा बन गया, मां बाप से गुस्ताख़ाना अन्दाज़ इख़्तियार करने वाले उन का अदब करने वाले बन गए, जिन की ह़-र-कतों की वजह से कभी पूरा मह़ल्ला तंग था वोह सारे अ़लाक़े की आंख का तारा बन गए, चोरी व डाके के आ़दी दूसरों की इ़ज़्ज़त व आबरू की हि़फ़ाज़त करने वाले बन गए, किसी ग़रीब को देख कर तकब्बुर से नाक भौं चढ़ाने वाले आ़जिज़ी के पैकर बन गए, हर वक़्त ह़सद की आग में जलने वाले दूसरों के इ़ल्मो अ़मल में तरक़्क़ी की दुआ़एं देने वाले बन गए, गाने सुनने के शौक़ीन सुन्नतों भरे बयानात और म-दनी मुज़ाकरात की केसिटें सुनने वाले बन गए, फ़ोह़्श कलामी करने वाले ना'ते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ने वाले बन गए,युरोपी मुमालिक की रंगीनियों को देखने के ख़्वाब अपनी आंखों में सजाने वाले गुम्बदे ख़ज़रा की ज़ियारत के लिये तड़पने वाले बन गए, माल की मह़ब्बत में मरने वाले फ़िक्रे आख़िरत में मुब्तला रहने वाले बन गए, शराब पीने की आ़दत पालने वाले इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जाम पीने वाले बन गए, अपना वक़्त फ़ुज़ूलियात में बरबाद करने वाले अपना अक्सर वक़्त इ़बादत में गुज़ारने के लिये "म-दनी इन्आ़मात" के आ़मिल बन गए, फ़ोह़्श रसाइल व डायजस्ट के रसिया **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه व उ़-लमाए अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي के रसाइल और दीगर दीनी कुतुब का मुत़ा-लआ़ करने वाले बन गए, तफ़्सीर की ख़ात़िर टूर पर जाने के आ़दी राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले बन गए, "खाओ पियो और जान बनाओ" के ना'रे को अपनी ज़िन्दगी का मह़वर क़रार देने वाले इस

म-दनी मक़्सद को अपनाने वाले बन गए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ ."

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आप भी अभी तक दा'वते इस्लामी के पाकीज़ा माहोल से दूर हैं तो म-दनी मश्वरा है कि आज ही इस म-दनी माह़ोल से हमेशा के लिये वाबस्ता हो जाएं. इस वाबस्तगी के नतीजे में हमें दुन्या व आख़िरत की ढेरों ब-र-कतें नसीब होंगी. اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ

मदीना : दा'वते इस्लामी की बहारों के बारे में तफ़्सीली तौ़र पर जानने के लिये, "**ख़ुश नसीब मियां बीवी**", "**काफ़िर ख़ानदान का क़बूले इस्लाम**", "**भयानक ह़ादिसा**", "**दा'वते इस्लामी की बहारें** ह़िस्सा अव्वल, दुवुम" नामी रिसालों का ज़रूर मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं.

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बानिये दा'वते इस्लामी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस्लामी भाइयों को अपने शबो रोज़ शरीअ़त के मुत़ाबिक़ गुज़ारने के लिये 72, त़-लबा को 92 और इस्लामी बहनों को 63 म-दनी इन्आ़मात अ़त़ा फ़रमाए हैं. हमें चाहिये कि इन इन्आ़मात पर अ़मल करें और बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से म-दनी इन्आ़मात का रिसाला ह़ासिल करें और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना या'नी अपने मुह़ासबे के ज़रीए़ रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह या'नी क़-मरी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के म-दनी इन्आ़मात के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लें. اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ हमारी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ तौ़र पर म-दनी इन्क़िलाब बरपा होगा.

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये आ़शिक़ाने रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बे शुमार म-दनी क़ाफ़िले 12 माह, 30 दिन, 12 दिन और 3 दिन के लिये शहर ब शहर गाउं ब गाउं सफ़र करते रहते हैं, आप भी राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र कर के अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकट्ठा कीजिये. अपनी रोज़ मर्रा की दुन्यावी मस्रूफ़िय्यात तर्क कर के अपने घर वालों और दोस्तों की सोह़बत छोड़ कर जब हम इन म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करेंगे तो इन म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र के दौरान हमें अपने तर्ज़े ज़िन्दगी पर दियानत दाराना ग़ौरो तफ़क्कुर का मौक़अ़ मुयस्सर आएगा, अपनी आख़िरत को बेहतर से बेहतर बनाने की ख़्वाहिश दिल में पैदा होगी, जिस के नतीजे में अब तक किये जाने वाले गुनाहों के इर्तिकाब पर नदामत महसूस होगी, इन गुनाहों की मिलने वाली सज़ाओं का तसव्वुर कर के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, दूसरी त़रफ़ अपनी ना तुवानी व बे कसी का एह़सास दामन गीर होगा और अगर दिल ज़िन्दा हुवा तो ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सबब आंखों से बे इख़्तियार आंसू छलक कर रुख़्सारों पर बहने लगेंगे.

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने के नतीजे में फ़ोह़ूश कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह ज़बान से दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते क़ुर्आन, ह़म्दे इलाही عَزَّوَجَلَّ और ना'ते रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दी बन जाएगी, दुन्या की मह़ब्बत में डूबा हुवा दिल आख़िरत की बेह्तरी के लिये बे चैन हो जाएगा. اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

इस के इ़लावा अपने अपने शहरों में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत

फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटें.

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

मज्लिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ा-लआ़ कुतुब

(शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ)

(1) **करन्सी नोट के शर-ई अह़कामात :** येह किताब (किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी अह़कामि क़िर्त़ासिद्राहिम) की तस्हील व तख़्रीज पर मुश्तमिल है. जिस में नोट के तबादले और इस से मु-तअ़ल्लिक़ शर-ई अह़काम बयान किये गए हैं. (कुल सफ़ह़ात : 115)

(2) **विलायत का आसान रास्ता** (तसव्वुरे शैख़) : येह रिसाला (अल याक़ूतितुल वासित़ह) की तस्हील व तख़्रीज पर मुश्तमिल है. जिस में पीरो मुर्शिद के तसव्वुर के मौज़ूअ़ पर वारिद होने वाले ए'तिराज़ात का जवाब दिया गया है. (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) **ईमान की पहचान** (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) : इस रिसाले में तम्हीदे ईमान के मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी और ज़रूरी इस्ति़लाह़ात की मुख़्तसर तशरीह़ात दर्ज की गई हैं. (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) **मआ़शी तरक़्क़ी का राज़** (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाहो नजात व इस्लाह़) : इस रिसाले में पूरे आ़लमे इस्लाम के लिये चार निकात की सूरत में मआ़शी ह़ल पेश किया गया है.(कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) **शरीअ़त व त़रीक़त :** येह रिसाला (मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ़-लमाअ) का ह़ाशिया है. इस अ़ज़ीम रिसाले में शरीअ़त और त़रीक़त को अलग अलग मानने वाले जाहिलों की सह़ीह़

रहनुमाई की गई है. (कुल सफ़हात : 57)

(6) **सुबूते हिलाल के त़रीक़े** (तु-रिक़ इस्बाति हिलाल) : इस रिसाले में चांद के सुबूत के लिये मुक़र्रर शर-ई उसूलो ज़वाबित़ की तफ़्सीलात का बयान है. (कुल सफ़हात : 63)

(7) **औ़रतें और मज़ारात की ह़ाज़िरी :** येह रिसाला (जु-मलिन्नूर फ़ी नह्यिन्निसा-इ अ़न ज़ियारतिल क़ुबूर) का ह़ाशिया है. इस रिसाले में औ़रतों के ज़ियारते क़ुबूर के लिये निकलने से मु-तअ़ल्लिक़ शर-ई हुक्म पर वारिद होने वाले ए'तिराज़ात के मस्कत जवाबात शामिल हैं (कुल सफ़हात : 35)

(8) **आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब** (इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) : इस रिसाले में इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن पर बा'ज़ ग़ैर मुक़ल्लिदीन की त़रफ़ से किये गए चन्द सुवालात के मुदल्लल जवाबात ब सूरते इन्टरव्यू दर्ज किये गए हैं. (कुल सफ़हात : 100)

(9) **ईदैन में गले मिलना कैसा ?** येह रिसाला (विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ईद) की तस्हील व तख़्रीज पर मुश्तमिल है. इस रिसाले में ईदैन में गले मिलने को बिदअ़त कहने वालों के रद में दलाइल से मुज़य्यन तफ़्सीली फ़तवा शामिल है. (कुल सफ़हात : 55)

(10) **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल :** येह रिसाला (रद्दिल कह़ति़ वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) की तस्हील व तख़्रीज पर मुश्तमिल है. येह रिसाला पड़ोसियों और फ़ु-क़राअ से ख़ैर ख़्वाही और वबा को टालने के लिये सदक़ा के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल अह़ादीस व ह़िकायात का बेह़तरीन मजमूआ़ है. (कुल सफ़हात : 40)

(11) **वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के ह़ुक़ूक़ :** येह रिसाला

(अल हुक़ूक़ लि त़र्हिल उ़क़ूक़) की तस्हील व ह़ाशिया और तख़्रीज पर मुश्तमिल है, इस में वालिदैन, असातिज़ए किराम, एह़तिरामे मुस्लिम और दीगर हुक़ूक़ का तफ़्सीली बयान है. (कुल सफ़ह़ात : 125)

(12) **दुआ़ के फ़ज़ाइल :** येह रिसाला (अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़ह़ू ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़्सनिल विआ़अ) की ह़ाशिया व तस्हील और तख़्रीज पर मुश्तमिल है, जिस में दुआ़ से मु-तअ़ल्लिक़ तफ़्सीली अह़काम का बयान है और हर हर मौज़ूअ़ पर सैर ह़ासिल बह़स की गई है. (कुल सफ़ह़ात : 140)

शाएअ़ होने वाले अ़-रबी रसाइलः

अज़ इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(1) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74). (2) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77). (3) अल इजाज़ातिल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62). (4) इक़ामतुल क़ियामह (कुल सफ़ह़ात : 60). (5) अल मौहबी (कुल सफ़ह़ात : 46). (6) अजलिय्युल ए'लाम (कुल सफ़ह़ात : 70). (7) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़ह़ात : 93). (8) ह़ुस्सामुल ह़-रमैन अ़ला मुन्ह़रिल कुफ़्रि वल मैन (कुल सफ़ह़ात : 194)

शो'बए इस्लाह़ी कुतुब

(1) **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ : इस किताब में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से मु-तअ़ल्लिक़ कसीर आयाते करीमा, अह़ादीसे मुबा-रका और बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल व अह़वाल के बिखरे हुए मोतियों को सिल्के तह़रीर में पिरोने की कोशिश की गई है. (कुल सफ़ह़ात : 160)

(2) **इन्फ़िरादी कोशिश :** इस किताब में नेकी की दा'वत को ज़ियादा

से ज़ियादा आ़म करने के लिये इन्फ़िरादी कोशिश की ज़रूरत, इस की अहम्मिय्यत, इस के फ़ज़ाइल और इन्फ़िरादी कोशिश करने का त़रीक़ा बयान किया गया है. इलावा अज़ीं अस्लाफ़ की इन्फ़िरादी कोशिश के "99" मुन्तख़ब वाक़िआ़त को भी जम्अ़ किया गया है जिस में बानिये दा'वते इस्लामी अमीरे अहले सुन्नत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के "25" वाक़िआ़त भी शामिल हैं नीज़ किताब के आख़िर में इन्फ़िरादी कोशिश के अ़-मली त़रीक़े की मिसालें भी पेश की गई हैं. (कुल सफ़ह़ात : २००)

(3) **शाह राहे औलिया :** येह रिसाला सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तस्नीफ़ "**मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन**" का तर्जमा व तस्हील है. इस रिसाले में इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त के तह़्त मुन्फ़रिद अन्दाज़ में ग़ौरो तफ़क्कुर या'नी "**फ़िक्रे मदीना**" करने की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई है. म-सलन इन्सान को चाहिये कि दिन रात पर ग़ौर करे कि जब दिन की रोशनी फैल जाती है तो रात की तारीकी रुख़्सत हो जाती है इसी त़रह़ जब नेकियों का नूर इन्सान को ह़ासिल हो जाए तो उस के आ'ज़ा से गुनाहों की तारीकी रुख़्सत हो जाती है. मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त ग़ौर करे कि किस अ़-ज़मत वाले रब عَزَّوَجَلَّ के घर में दाख़िल हो रहा है ? इसी त़रह़ इबादत करते वक़्त ग़ौर करे कि इस में मेरा कोई कमाल नहीं येह तो रब तआ़ला का एह़सान है कि उस ने मुझे इबादत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई, **علیٰ هٰذاالقیاس**.

(कुल सफ़ह़ात : 36)

(4) **फ़िक्रे मदीना :** इस किताब में फ़िक्रे मदीना (या'नी मुह़ासबे) की ज़रूरत, इस की अहम्मिय्यत, इस के फ़वाइद और बुज़ुर्गाने दीन की फ़िक्रे मदीना के "131" वाक़िआ़त को जम्अ़ किया गया है जिस में

बानिये दा'वते इस्लामी अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के 41 वाक़िआ़त भी शामिल हैं नीज़ मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर फ़िक्रे मदीना करने का अ़-मली त़रीक़ा भी बयान किया गया है.

(कुल सफ़ह़ात : 164)

(5) **इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ?** इस रिसाले में उन तमाम मसाइल का ह़ल बयान करने की कोशिश की गई है जो एक त़ालिबे इ़ल्म को इम्तिह़ानात की तय्यारी के दौरान दर पेश हो सकते हैं. येह रिसाला बुन्यादी त़ौर पर दर्से निज़ामी के त़-लबा इस्लामी भाइयों को मद्दे नज़र रख कर लिखा गया है, लेकिन स्कूल व कॉलेज में पढ़ने वाले त़-लबा (Students) के लिये भी यक्सां मुफ़ीद है. इस लिये इन्फ़िरादी कोशिश करने वाले इस्लामी भाइयों को चाहिये कि वोह येह रिसाला इन त़-लबा तक भी पहुंचाएं क्यूंकि इस रिसाले में अपने म-दनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" को पेशे नज़र रखते हुए बहुत से मक़ामात पर नेकी की दा'वत भी पेश की गई है. (कुल सफ़ह़ात : 132)

(6) **नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल :** नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल पर मुश्तमिल एक किताब जिस में मुख़्तलिफ़ सूरतों का ह़ुक्म अकाबिरीन رَحِمَهُمُ اللّٰه की किताबों से एक जगह जम्अ़ करने की सा'य की गई है ताकि अ़वामुन्नास की इन मसाइल तक आसानी से रसाई हो सके और इस मस्अले के बारे में लोगों में जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ग़लत फ़ह्मियां पाई जाती हैं उन का इज़ाला हो सके.

(कुल सफ़ह़ात : 39)

(7) **जन्नत की दो चाबियां :** इस किताब में पहले जन्नत की ने'मतों

का बयान किया गया है, फिर सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की जानिब से ज़बान व शर्म गाह की हिफ़ाज़त से मु-तअ़ल्लिक़ दी गई एक बिशारत ज़िक्र की गई है. इस के बा'द तफ़्सीलन बताया गया है कि हम इस की ज़मानत के हक़दार किस त़रह़ बन सकते हैं. ह़स्बे ज़रूरत शर-ई मसाइल भी ज़िक्र किये गए हैं. उम्मीदे वासिक़ है ज़बान और शर्म गाह की हिफ़ाज़त के बारे में एक मक़ाम पर इतनी तफ़्सील आप को किसी दूसरी किताब में न मिलेगी. **ذلك فضل الله العظيم**

(कुल सफ़ह़ात : 152)

(8) **काम्याब उस्ताज़ कौन ?** इस किताब में उन तमाम उमूर को बयान करने की कोशिश की गई है जिन का तअ़ल्लुक़ तदरीस से हो सकता है म-सलन सबक़ की तय्यारी, सबक़ पढ़ाने का त़रीक़ा, सुनने का त़रीक़ा **علیٰ هذاالقیاس**. येह किताब बुन्यादी त़ौर पर शो'बए दर्से निज़ामी को मद्दे नज़र रख कर लिखी गई है लेकिन हिफ़्ज़ व नाज़िरा के उस्ताज़ भी मा'मूली तरमीम के साथ इस से ब ख़ूबी फ़ाएदा उठा सकते हैं नीज़ स्कूल व कॉलेजिज़ में पढ़ाने वाले असातिज़ा के लिये भी इस किताब का मुत़ा-लआ़ फ़ाएदे से ख़ाली नहीं है.

(कुल सफ़ह़ात : 43)

(9) **निसाबे म-दनी क़ाफ़िला :** इस किताब में म-दनी क़ाफ़िला से मु-तअ़ल्लिक़ उमूर का बयान है, म-सलन म-दनी क़ाफ़िला की अहम्मिय्यत, म-दनी क़ाफ़िला कैसे तय्यार किया जाए, म-दनी क़ाफ़िला का जदवल, इस जदवल पर अ़मल किस त़रह़ किया जाए, अमीरे क़ाफ़िला कैसा होना चाहिये ? इ़लावा अज़ीं मौज़ूअ़ की मुनासबत से अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي के अ़त़ा कर्दा म-दनी फूल भी इस किताब में सजा दिये गए हैं. अपने मौज़ूअ़ के

ए'तिबार से मुन्फ़रिद किताब है. (कुल सफ़ह़ात : 196)

(10) **हुस्ने अख़्लाक़ :** येह किताब दुन्याए इस्लाम के अ़ज़ीम मुह़द्दिस सय्यिदुना इमाम त़-बरानी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की शाहकार तालीफ़ **''मुकारिमुल अख़्लाक़''** का तर्जमा है. इस किताब में इमाम त़-बरानी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने अख़्लाक़ के मुख़्तलिफ़ शो'बों के मु-तअ़ल्लिक़ अह़ादीस जम्अ़ की हैं. उम्मीदे वासिक़ है कि येह किताब शबो रोज़ इन्फ़िरादी कोशिश में मस्रूफ़ रहने वाले इस्लामी भाइयों के लिये बहुत मुफ़ीद साबित होगी. اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 74)

(11) **फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम :** येह किताब इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ الرَّحْمَة की मायानाज़ किताब **''एह़याउल उ़लूम''** की तल्ख़ीस व तस्हील है जिसे दर्स देने के अन्दाज़ में मुरत्तब किया गया है. इख़्लास, मज़म्मते दुन्या, तवक्कुल, सब्र जैसे मज़ामीन पर मुश्तमिल है.

(कुल सफ़ह़ात : 325)

(12) **राहे इल्म :** येह रिसाला **''ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम''** का तर्जमा व तस्हील है जिस में उन उमूर का बयान है जिन की रिआ़यत राहे इ़ल्म पर चलने वाले के लिये ज़रूरी है. और उन बातों का ज़िक्र है जिन से इज्तिनाब मुअ़ल्लिम व मु-तअ़ल्लिम के लिये ज़रूरी है. (कुल सफ़ह़ात : 102)

(13) **ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ :** येह किताब ह़ाफ़िज़े मिल्लत अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुबारक पूरी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तालीफ़ है ''जिसे ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़'' के नाम से शाएअ़ किया गया है. मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने अ़क़ाइदे ह़क़्क़ा व बात़िला के फ़र्क़ को निहायत आसान अन्दाज़ में सुवालन जवाबन पेश किया है जिस की वजह से कम ता'लीम याफ़्ता लोग भी इस का आसानी से मुत़ा-लआ़ कर सकते हैं.

(कुल सफ़ह़ात : 50)

(14) **तह़क़ीक़ात :** येह किताब फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द, मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तालीफ़ है, तह़क़ीक़ी अन्दाज़ में लिखी गई इस किताब में बद मज़हबों की त़रफ़ से वारिद होने वाले ए'तिराज़ात के तसल्ली बख़्श जवाबात दिये गए हैं. मुतलाशियाने ह़क़ के लिये नूर का मीनारा है. (कुल सफ़ह़ात : 142)

(15) **अर-बईने ह़-नफ़िय्यह :** येह किताब फ़क़ीहे आ'ज़म ह़ज़रत अ़ल्लामा अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़ नक़्शबन्दी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तालीफ़ है. जिस में नमाज़ से मु-तअ़ल्लिक़ चालीस अह़ादीस को जम्अ़ किया गया है और इख़्तिलाफ़ी मसाइल में ह़-नफ़ी मज़हब की तक़्विय्यत निहायत मुदल्लल अन्दाज़ में बयान की गई है.

(कुल सफ़ह़ात : 112)

(16) **बेटे को नसीह़त :** येह इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ الرَّحْمَة की किताब **''अय्युहल वलद''** का उर्दू तर्जमा है. बच्चों की तरबिय्यत के लिये ला जवाब किताब है इस में इख़्लास, मज़म्मते माल और तवक्कुल जैसे मज़ामीन शामिल हैं. (कुल सफ़ह़ात : 64)

(17) **त़लाक़ के आसान मसाइल :** इस फ़िक़्ही किताब में मसाइले त़लाक़ को आ़म फ़ह्म अन्दाज़ में पेश किया गया है जिस की बिना पर त़लाक़ से मु-तअ़ल्लिक़ अ़वामुन्नास में पाई जाने वाली ग़लत़ फ़ह्मियों का काफ़ी ह़द तक इज़ाला हो सकता है. (कुल सफ़ह़ात : 30)

(18) **तौबा की रिवायात व ह़िकायात :** इस किताब की इब्तिदा में तौबा की ज़रूरत का बयान है, फिर तौबा की अहम्मिय्यत व फ़ज़ाइल मज़कूर हैं. इस के बा'द तफ़्सीलन बताया गया है कि सच्ची तौबा किस त़रह़ की जा सकती है ? और आख़िर में तौबा करने वालों के तक़रीबन 55 वाक़िआ़त भी नक़्ल किये गए हैं. उम्मीदे वासिक़ है कि येह

किताब इस्लाह़ी कुतुब में बेहतरीन इज़ाफ़ा मु-तसव्विर होगी. اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 124)

(19) **अद्दा'वति इलल फ़िक्र** (अ़-रबी) : येह किताब मुह़क़्क़िक़े जलील मौलाना मन्शा ताबिश क़सूरी مَدَّ ظِلُّهُ العَالِی की मायानाज़ तालीफ़ ''दा'वते फ़िक्र'' का अ़-रबी तर्जमा है जिस में बद मज़ह़बों को अपनी रविश पर नज़रे सानी करने की तरग़ीब दी गई है.

(कुल सफ़ह़ात : 148)

(20) **आदाबे मुर्शिदे कामिल** (मुकम्मल पांच ह़िस्से) : फ़ी ज़माना एक त़रफ़ नाक़िस और कामिल पीर का इम्तियाज़ मुश्किल है तो दूसरी त़रफ़ जो किसी कामिल मुर्शिद के दामन से वाबस्ता हैं भी तो उन्हें अपने मुर्शिद के ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब से आशनाई नहीं. इन ह़ालात में इस बात की अशद ज़रूरत महसूस हुई कि कोई ऐसी तह़रीर हो जिस से शरीअ़त की रोशनी में मौजूदा दौर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ नाक़िस और कामिल मुर्शिद की पहचान भी हो सके और कामिल मुर्शिद के दामन से वाबस्तगान आदाबे मुर्शिद से मुत़्लअ़ हो कर ना वाक़िफ़िय्यत की बिना पर त़रीक़त की राह में होने वाले ना क़ाबिले तसव्वुर नुक़्सान से भी महफ़ूज़ रह सकें. इस ह़क़ीक़त को जानने और मुर्शिदे कामिल के आदाब समझने के लिये आदाबे मुर्शिदे कामिल के मुकम्मल पांच ह़िस्सों पर मुश्तमिल इस किताब में शरीअ़त व त़रीक़त से मु-तअ़ल्लिक़ ज़रूरी मा'लूमात पेश करने की सा'य की गई है. (कुल सफ़ह़ात : तक़रीबन 200)

(21) **टी वी और मूवी** : फ़ी ज़माना ह़ालात बड़ी तेज़ी के साथ तनज़्ज़ुली की त़रफ़ बढ़ते ही चले जा रहे हैं. एक त़रफ़ बे अ़-मली का सैलाब अपनी तबाही मचा रहा है तो दूसरी त़रफ़ बद अ़क़ीदगी के

ख़ौफ़नाक तूफ़ान की हौलनाकियां बरबादी के मनाज़िर पेश कर रही हैं. इन ह़ालात में मीडिया का त़र्ज़े अ़मल भी सब के सामने है.

''टीवी और मूवी'' नामी इस रिसाले में टीवी और मूवी के ना जाइज़ इस्ति'माल की तबाह कारियों और जाइज़ इस्ति'माल की मुख़्तलिफ़ सूरतों और फ़ी ज़माना इस की ज़रूरत का बयान है.

(कुल सफ़ह़ात : 32)

(22) **फ़तावा अहले सुन्नत :** इस सिल्सिले में सात ह़िस्से शाएअ़ हो चुके हैं.

(23) **जन्नत में ले जाने वाले आ'माल :** इस किताब में मुख़्तलिफ़ नेक आ'माल म-सलन हुसूले इ़ल्म, नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात, दीगर सदक़ात, तिलावते क़ुर्आन, सब्र, हुस्ने अख़्लाक़, तौबा, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और दुरूदे पाक के सवाब के बारे में दो हज़ार2000 से ज़ाइद अह़ादीस मौजूद हैं. इस किताब का मुत़ा-लआ़ करने वाले ख़ुद में अ़मल का जज़्बा बेदार होता महसूस करेंगे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ. नेकी की दा'वत आम करने का जज़्बा रखने वाले मुसल्मानों के लिये इस में कसीर मवाद मौजूद है. (तक़रीबन 1100 सफ़ह़ात)

शो'बए दर्सी क़ुतुब

(1) **ता'रीफ़ाते नहूविय्यह :** इस रिसाले में इ़ल्मे नह्व की मशहूर इस्त़िलाह़ात की ता'रीफ़ात मअ़ इम्सला व तौज़ीह़ात जम्अ़ कर दी गई हैं. अगर त़-लबा इन ता'रीफ़ात का इस्तिह़्ज़ार कर लें तो इ़ल्मे नह्व के मसाइल व अब्ह़ास समझने में बहुत सहूलत रहेगी, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ. (कुल सफ़ह़ात : 45)

(3) **किताबुल अ़क़ाइद :** सद्रुल अफ़ाज़िल ह़ज़रत अ़ल्लामा सय्यिद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तस्नीफ़ कर्दा इस किताब में

इस्लामी अ़क़ाइद और ह़दीसे पाक की रोशनी में क़ियामत से पहले पैदा होने वाले तीस झूटे मुद्दइयाने नुबुव्वत (कज़्ज़ाबों) में से चन्द की तफ़्सील बयान की गई है. येह किताब कई मदारिस के निसाब में भी शामिल है. (कुल सफ़ह़ात : 64)

(3) **नुज़्हतुन्नज़र शर्ह़े नख़्बतुल फ़िक्र :** येह किताब फ़ने उसूले ह़दीस में लिखी गई इमाम ह़ाफ़िज़ अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की बे मिसाल तालीफ़ **''नख़्बतुल फ़िक्र फ़ी मुस्त़लिह़ि अहलिल असर''** की अ़-रबी शर्ह़ है. इस शर्ह़ में क़ुव्वत व ज़ो'फ़ के ए'तिबार से ह़दीस की अक़्साम, इन के द-रजात और मुह़द्दिसीन की इस्ति'माल कर्दा इस्त़िलाह़ात की वज़ाह़त दर्ज की गई है. त़-लबा के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है. (कुल सफ़ह़ात : 175)

(3) **जुब्दतुल फ़िक्र शर्ह़े नख़्बतुल फ़िक्र :** येह किताब फ़ने उसूले ह़दीस में लिखी गई इमाम ह़ाफ़िज़ अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की बे मिसाल तालीफ़ **''नख़्बतुल फ़िक्र फ़ी मुस्त़लिह़ि अहलिल असर''** की उर्दू शर्ह़ है. इस शर्ह़ में क़ुव्वत व ज़ो'फ़ के ए'तिबार से ह़दीस की अक़्साम, इन के द-रजात और मुह़द्दिसीन की इस्ति'माल कर्दा इस्त़िलाह़ात की वज़ाह़त दर्ज की गई है. त़-लबा के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है. (कुल सफ़ह़ात : 91)

(4) **शरीअ़त में उ़र्फ़ की अहम्मिय्यत :** येह रिसाला इमाम सय्यिद मुह़म्मद अमीन बिन उ़मर आबिदीन शामी عَلَيْهِ الرَّحْمَة के उ़र्फ़ से मु-तअ़ल्लिक़ तह़रीर कर्दा अ़-रबी रिसाले **''नशिरल उ़र्फ़ फ़ी बिना-इ बा'दिल अह़कामि अ़लल उ़र्फ़''** का उर्दू तर्जमा है. तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह के त़-लबा इस का ज़रूर मुत़ा-लआ़ करें.

(कुल सफ़ह़ात : 105)

(5) **अर-बईनिन न-ववियय्ह** (अ़-रबी) : अ़ल्लामा श-रफ़ुद्दीन न-ववी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तालीफ़ जो कि कसीर मदारिस के निसाब में शामिल है. इस किताब को ख़ूब सूरत अन्दाज़ में शाएअ़ किया गया है. (कुल सफ़ह़ात : 121)

(6) **निसाबुत्तजवीद :** इस किताब में दुरुस्त मख़ारिज से हुरूफ़े कुर्आनिया की अदाएगी की मा'रिफ़त का बयान है. मदारिसे दीनिया के त़-लबा के लिये बे ह़द मुफीद है. (कुल सफ़ह़ात : 79)

(7) **गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल :** इस किताब में अरकाने इस्लाम की वज़ाह़त बयान की गई है. (कुल सफ़ह़ात : 180)

(8) **काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कैसे बनें ?** इस किताब में इ़ल्म के फ़ज़ाइल, त़-लबे इ़ल्म की निय्यतों, अस्बाक़ की पेशगी तय्यारी और तर्जमे में महारत ह़ासिल करने का त़रीक़ा, काम्याब त़ालिबुल कौन ? वग़ैरहुम मौज़ूआ़त का बयान है. (कुल सफ़ह़ात : तक़रीबन 63)

शो'बए तख़रीज

अ़जाइबुल कुर्आन मअ़ ग़राइबुल कुर्आन : इस किताब की जदीद कम्पोज़िंग, पुराने नुस्ख़े से मुत़ाबिक़त और निहायत एह़तियात़ से प्रूफ़ रीडिंग की गई है. ह़वाला जात की तख़रीज भी की गई है.

(कुल सफ़ह़ात : 206)

मज्लिसे तराजुमे कुतुब की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुब

इन रसाइल के अ़-रबी तराजुम शाएअ़ हो चुके हैं :

(1) बादशाहों की हड्डियां (इ़ज़ामुल मलूक)

(मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)

(2) मुर्दे के सदमे (हुमूमिल मय्यित)

(मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)

(३) श-ज-रए आ़लिया क़ादिय्यह र-ज़विय्यह अ़त्तारिय्यह

(मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)

(4) ज़ियाए दुरूदो सलाम (ज़ियाइस्सलाति वस्सलाम)

(मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)

इन रसाइल के फ़ारसी तराजुम शाएअ़ हो चुके हैं :

(1) ज़ियाए दुरूदो सलाम (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)

(2) ग़फ़लत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)

(3) अबू जहल की मौत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)

(4) एहतिरामे मुस्लिम (मुअल्लिफ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)

(5) दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़.

इस के इलावा अमीरे अहले सुन्नत مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي के कई रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ़ हो चुके हैं.

इस्लाम जो मुजद्दिद (सिन्धी) : येह किताब इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की मुख़्तसर सवानेह़े ह़यात पर मुश्तमिल है. जिस में आप के इल्मी मक़ाम और दीनी ख़िदमात का बयान है. (कुल सफ़ह़ात : 52)